राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

AKSHANSH PUBLICATION

तृतीय श्रेणी
अध्यापक
मुख्य परीक्षा

41 जिलों एवं 7 संभाग पर आधारित

REET MAINS

LEVEL-I (कक्षा 1 से 5 के लिए) | Level-II (कक्षा 6 से 8 के लिए)

राजस्थान सामान्य ज्ञान, राजस्थानी भाषा एवं शैक्षिक परिदृश्य

राजस्थान का भूगोल, इतिहास, कला व संस्कृति, राजस्थानी भाषा, राजस्थान का सामान्य ज्ञान, शैक्षिक परिदृश्य व RTE एक्ट

भाग-1

विशेषताएँ:

1. संपूर्ण पाठ्यक्रम एवं नवीनतम परीक्षा प्रणाली पर आधारित
2. परिक्षोपयोगी संभावित प्रश्नोतरों का संग्रह
3. NCERT & RBSE एवं शिक्षा विभाग के विभिन्न पोर्टल्स के सार का समावेश

विगत वर्ष के प्रश्नों का व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

करण यादव | राम चौधरी | कुणाल सनाढ्य | प्रदीप सिनसिनवार | नीरज जाँगिड

अक्षांश पब्लिकेशन

M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

AKSHANSH
PUBLICATION

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

तृतीय श्रेणी
अध्यापक
मुख्य परीक्षा

41 जिलों एवं 7 संभाग पर आधारित

REET MAINS

LEVEL-I (कक्षा 1 से 5 के लिए) | Level-II (कक्षा 6 से 8 के लिए)

राजस्थान सामान्य ज्ञान, राजस्थानी भाषा एवं शैक्षिक परिदृश्य

राजस्थान का भूगोल, इतिहास, कला व संस्कृति, राजस्थानी भाषा, राजस्थान का सामान्य ज्ञान, शैक्षिक परिदृश्य व RTE एक्ट

भाग-1

"अक्षांश प्रकाशन की समस्त पुस्तकें लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर के अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन एवं अक्षांश प्रकाशन की समर्पित टीम के सहयोग से तैयार की गई हैं।"

संपादक
करण सर, राम सर, कुणाल सर, प्रदीप सर, नीरज सर

सह संपादक
राजवर्धन बेगड़, निशांत सोलंकी, विकास नाथ, गंगा सिंह

प्रकाशन
अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर (राज.)

MRP : ₹849

नोट :- अब लक्ष्य क्लासेज़ की सभी आगामी पुस्तकें केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के माध्यम से ही प्रकाशित की जाएंगी। ये सभी पुस्तकें बाजार में 'अक्षांश' नाम से ही उपलब्ध होंगी। विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि आगामी समय में 'लक्ष्य' नाम से कोई भी पुस्तक प्रकाशित नहीं की जाएगी। इसलिए कृपया पुस्तक खरीदते समय केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के नाम से प्रकाशित और अधिकृत पुस्तकें ही बुक स्टोर्स से प्राप्त करें, ताकि आपको प्रमाणिक, अद्यतन एवं परीक्षा-उपयुक्त सामग्री प्राप्त हो।भविष्य में 'लक्ष्य' नाम से प्रकाशित किसी भी पुस्तक की सामग्री या गुणवत्ता की जिम्मेदारी 'अक्षांश प्रकाशन' या 'लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर' की नहीं होगी।

प्रकाशन
अक्षांश प्रकाशन
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle,
Main Road, Udaipur

लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर से जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करे

TELEGRAM INSTAGRAM YOUTUBE FACEBOOK WHATSAPP

बुक कोड - AP0005

©सर्वाधिकार - अक्षांश प्रकाशन
akshanshpublicationjdr@gmail.com

मुख्य वितरक - लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
M. 9079798005, 6376491126

अक्षांश प्रकाशन ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को अक्षांश प्रकाशन की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

विषय वस्तु

01 राजस्थान का भूगोल

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान का परिचय	1 – 9
2.	राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप	10 – 26
3.	जलवायु एवं मानसून तंत्र	27 – 38
4.	अपवाह तंत्र (नदी, झील, बांध एवं जल संरक्षण)	39 – 53
5.	वन संपदा, जैव विविधता, वन्यजीव एवं अभयारण्य	54 – 71
6.	मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण	72 – 82
7.	राजस्थान की प्रमुख फसलें	83 – 113
8.	जनसंख्या घनत्व, साक्षरता एवं लिंगानुपात	114 – 121
9.	राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र	122 – 123
10.	धात्विक एवं अधात्विक खनिज	124 – 149
11.	राजस्थान के ऊर्जा संसाधन	150 – 166
12.	राजस्थान के पर्यटन स्थल	167 – 174
13.	राजस्थान में यातायात के साधन	175 – 188

02 राजस्थान की कला एवं संस्कृति

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रमुख दुर्ग	190 – 201
2.	महल एवं स्मारक	202 – 207
3.	हवेलियाँ, छतरियाँ एवं बावड़ियाँ	208 – 216
4.	मंदिर, मकबरे, मस्जिद, दरगाह	217 – 224
5.	मेले एवं त्योहार	225 – 232
6.	लोक कला एवं हस्तकला	233 – 243
7.	चित्रकला	244 – 249
8.	लोक गीत एवं संगीत	250 – 254
9.	लोक नृत्य एवं नाट्य	255 – 263
10.	लोक देवता एवं लोक देवियाँ	264 – 271
11.	संत-सम्प्रदाय एवं साहित्य	272 – 279
12.	आभूषण, वेशभूषा एवं खान – पान	280 – 287
13.	रीति-रिवाज एवं प्रथाएँ	288 – 294

03 राजस्थानी भाषा

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	296 – 298
2.	राजस्थानी साहित्य एवं साहित्यकार	299 – 309

04 राजस्थान का इतिहास

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्राचीन सभ्यताएँ	311 – 318
2.	प्रमुख राजवंश, प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था	319 – 382
3.	1857 की क्रांति	383 – 390
4.	किसान आंदोलन	391 – 400
5.	जनजातीय आंदोलन	401 – 405
6.	प्रजामण्डल आंदोलन	406 – 413
7.	राजस्थान का एकीकरण	414 – 418
8.	प्रमुख व्यक्तित्व	419 – 425

05 राजस्थान का सामान्य ज्ञान

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान के प्रतीक चिह्न	427 – 428
2.	राजस्थान में राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाएँ	429 – 439
3.	राजस्थान के प्रमुख अनुसंधान केन्द्र	440 – 442
4.	राजस्थान के प्रमुख धार्मिक स्थल	443 – 449
5.	राजस्थान के प्रमुख खिलाड़ी	450 – 451
6.	राजस्थान के प्रमुख नगर एवं स्थल	452 – 458
7.	राजस्थान के प्रमुख उद्योग	459 – 475
8.	राजस्थान में जनकल्याणकारी योजनाएँ	476 – 486
9.	राजस्थान की राजव्यवस्था	487 – 512

06 शैक्षिक परिदृश्य, नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	शिक्षण अधिगम के नवाचार	514 – 528
2.	केन्द्र एवं राज्य सरकार की विद्यार्थी कल्याणकारी योजनाएं एवं पुरस्कार	529 – 535
3.	विद्यालय प्रबंधन एवं संबंधित समितियाँ	536 – 555
4.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020	556 – 561
5.	शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 और 2011	562 – 580
6.	राजस्थान के मान्यता प्राप्त निजी विद्यालयों में नि:शुल्क प्रवेश	581 – 585
7.	राजस्थान में शैक्षिक परिदृश्य एवं शिक्षण संस्थाएँ	586 – 618

विगत वर्ष के प्रश्न

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
#	Reet Mains L-1 (Ist Shift) 25.02.2023	620 – 623
#	Reet Mains L-2 science & Math 25.02.2023	623 – 625
#	Reet Mains L-2 SST 26.02.2023	625 – 627
#	Reet Mains L-2 HINDI 26.02.2023	627 – 630
#	Reet Mains L-2 SANSKRIT 27.02.2023	630 – 632
#	Reet Mains L-2 ENGLISH 27.02.2023	632 – 634

राजस्थान का भूगोल

स्थिति व विस्तार

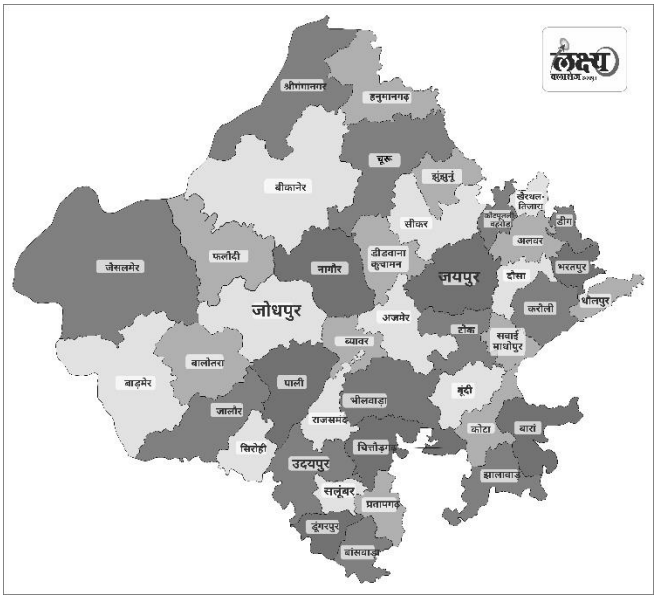

- राजस्थान क्षेत्रफल के हिसाब से भारत का सबसे बड़ा राज्य है और यह देश के उत्तर–पश्चिम में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 3,42,239**/3,42,239.74** वर्ग किलोमीटर है, (1,32,139 वर्ग मील) जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41% या 1/10वाँ भाग या दसवां हिस्सा है।
- विश्व के कुल क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान 0.25% है।
- 1 नवम्बर, 2000 को मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़ राज्य के अलग होने से राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य बना।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के पाँच बड़े राज्य क्रमशः राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि राजस्थान श्रीलंका से पाँच गुना, **स्विट्जरलैण्ड से आठ गुणा,** चेकोस्लोवाकिया से तीन गुना, इजराइल से सत्रह गुना, ब्रिटेन से लगभग दुगुना है।
- जापान, कांगो रिपब्लिक, फिनलैंड और जर्मनी के क्षेत्रफल राजस्थान के क्षेत्रफल लगभग बराबर है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान के तीन बड़े जिले –
  1. जैसलमेर 2. बीकानेर 3. बाड़मेर

राजस्थान की ग्लोबीय स्थिति

अक्षांशीय स्थिति
(अक्षांशीय दृष्टि से राजस्थान उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।)

देशांतरीय स्थिति
(देशांतरीय दृष्टि से राजस्थान पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।)

- ग्लोब या विश्व के मानचित्र में राजस्थान की स्थिति उत्तर–पूर्व (इशान कोण) में है।
- राजस्थान की आकृति विषम चतुष्कोणीय चतुर्भुजाकार या पतंगाकार है।
- इस आकृति के बारे में सर्वप्रथम 'टी.एच. हेंडले' ने बताया था।

राजस्थान का अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार

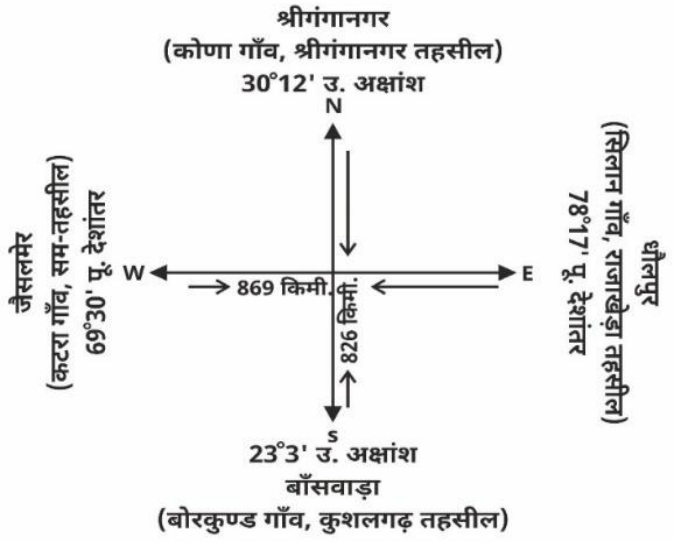

- राजस्थान की उत्तर से दक्षिण लम्बाई – 826km
- राजस्थान की पूर्व से पश्चिम चौड़ाई = 869km
- लम्बाई व चौडाई का अंतर = 869 – 826 = 43km
- उ. प. से द. पूर्व का विकर्ण = 850 km
- उ.पू. से द. पश्चिम का वकर्ण = 784km
- विकर्णों का अंतर = 850 – 784km =66km
- राजस्थान का मध्यवर्ती जिला – नागौर (तहसील – मेड़ता सिटी)
- मध्यवर्ती गाँव – लाम्पोलाई गाँव
- सैटलाइट सर्वे के अनुसार मध्यवर्ती गाँव - गगराना

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार–

- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार **23°03'** उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश तक है।
- **अक्षांशीय रेखाओं का उपयोग दो स्थानों के बीच की दूरी ज्ञात करने व जलवायु के निर्धारण में किया जाता है।**
- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 7°9' अक्षांशों के मध्य है।
- राजस्थान की उत्तर से दक्षिण लम्बाई 826 किलोमीटर है।
- राजस्थान का उत्तरतम बिन्दु कोणा गाँव (श्रीगंगानगर) है।
- राजस्थान का दक्षिणतम बिन्दु बोरकुण्ड (बाँसवाड़ा) है।

अक्षांश (Latitude) – पृथ्वी पर अक्षांश एक काल्पनिक रेखाएँ हैं जो ग्लोब पर आड़ी या पूर्व से पश्चिम खींची गयी हैं।

- भूमध्य रेखा/विषुवत वृत्त/वृहद् वृत्त (कुल लम्बाई–40,076 किमी.) यह पृथ्वी पर खींचा जा सकने वाला सबसे बड़ा वृत्त हैं, जो पृथ्वी को दो बराबर भागों में विभाजित करता है, इसके उत्तरी भाग को उत्तरी गोलार्द्ध और दक्षिणी भाग को दक्षिणी गोलार्द्ध कहते हैं।
- ग्लोब पर कुल अक्षांश रेखाओं की संख्या – 179
- ग्लोब पर कुल अक्षाशों की संख्या – 181
- दो अक्षांश रेखाओं के मध्य दूरी – 111.13 किमी.

राजस्थान का देशांतरीय विस्तार –

- राजस्थान का देशान्तरीय विस्तार 69°30′ पूर्वी देशांतर से 78°17′ पूर्वी देशांतर तक है।
- राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 8°47′ देशांतरों के मध्य है।
- राजस्थान की पूर्व से पश्चिम चौड़ाई 869 किलोमीटर है।
- राजस्थान का पूर्वी बिन्दु सिलाना गाँव (धौलपुर) है।
- राजस्थान का पश्चिमी बिन्दु कटरा गाँव (जैसलमेर) है।

पृथ्वी पर अक्षांशीय व देशान्तरीय रेखाओं का जाल

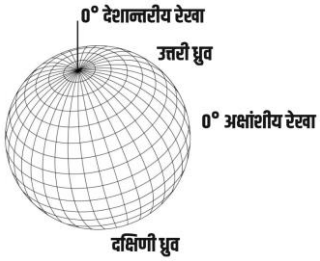

देशान्तर (Longitude) – ग्लोब पर उत्तर से दक्षिण की ओर खींची जाने वाली काल्पनिक रेखाएँ 'देशान्तर रेखाएँ' कहलाती हैं। दो देशान्तरों के बीच की दूरी अंशों में मापते हैं, प्रत्येक अंश को पुन: मिनट और सैकण्ड में विभाजित किया जाता है।

- ग्लोब पर कुल देशांतर रेखाओं की संख्या – 360
- पृथ्वी की भूमध्य रेखीय परिधि लगभग 40,076 किमी. है (40,076/360 = 111.32 किमी.)
- भूमध्य रेखा पर दो देशान्तरों के मध्य लगभग 111.32 किमी. की दूरी होती है। दो देशान्तरों के मध्य का भाग गोरे कहलाता है।
- देशान्तर रेखाओं में किसी स्थान की स्थिति व समय का निर्धारण होता है।

कर्क रेखा

- **कर्क रेखा - 23°30 उत्तरी अक्षांश रेखा को कर्क रेखा कहते हैं। यह पृथ्वी की उत्तर अक्षांश रेखा है, जिस पर सूर्य दोपहर के समय लम्बवत् (सीधा) चमकता है, यहाँ सूर्य 21 जून को सीधा चमकता है, इसके बाद दक्षिणायन होना प्रारंभ हो जाता है।**
- **21 जून को राजस्थान में सबसे लम्बा दिन व सबसे छोटी रात होती है। कर्क रेखा पर स्थित क्षेत्रों में 21 जून को दोपहर में परछाई नहीं बनती है, इसलिए इसे 'नो शैडो जोन' कहते हैं।**
- राजस्थान का अधिकांश भाग कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है। कर्क रेखा की राजस्थान में लम्बाई लगभग 26 किमी है।
- कर्क रेखा राजस्थान के 2 जिलों से गुजरती है। कर्क रेखा बाँसवाड़ा जिले के मध्य (कुशलगढ़ तहसील) से होकर गुजरती है तथा डूंगरपुर जिले की दक्षिणी सीमा (चिखली गाँव) के पास से होकर गुजरती है।
- कर्क रेखा के सर्वाधिक नजदीक शहर- कुशलगढ़ (बाँसवाड़ा)
- कर्क रेखा के सर्वाधिक निकट जिला मुख्यालय – बाँसवाड़ा
- कर्क रेखा से सर्वाधिक दूर शहर/जिला मुख्यालय – गंगानगर
- कर्क सक्रांति / ग्रीष्म सक्रान्ति- 21 जून को कर्क रेखा पर सूर्य सीधा चमकता है।
- सूर्य की किरणों का सर्वाधिक सीधापन – बाँसवाड़ा
- सूर्य की किरणों का सर्वाधिक तिरछापन – गंगानगर
- राजस्थान में सूर्य की किरणों के तिरछापन का आरोही क्रम - दक्षिण से उत्तर की ओर
  (उदाहरण के लिए बांसवाड़ा से गंगानगर की ओर जाने पर सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है।)
- राजस्थान में सूर्य की किरणों के सीधापन का आरोही क्रम उत्तर से दक्षिण की ओर
  (उदाहरण के लिए गंगानगर से बांसवाड़ा की ओर जाने पर सूर्य की किरणों का सीधापन बढ़ता जाता है।)
- माही नदी कर्क रेखा को दो बार काटती है।
- **नोट –** भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है व तापमान कम होता जाता है।

प्रमुख अक्षांश –

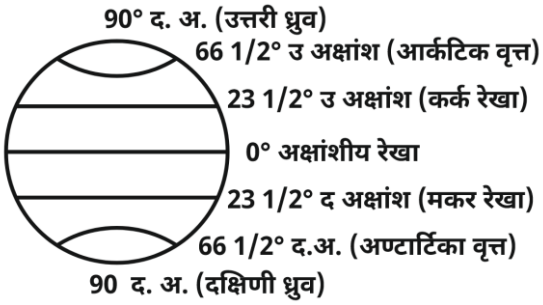

राजस्थान की स्थिति, विस्तार एवं आकृति

स्थलीय सीमा

- राजस्थान की कुल स्थलीय सीमा 5,920 किलोमीटर है, जिसमें से 1,070 किलोमीटर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तथा 4,850 किलोमीटर अन्तर्राज्यीय सीमा है।

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा

- राजस्थान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पाकिस्तान के साथ लगती है, जिसका नाम 'रेडक्लिफ रेखा' है।

रेडक्लिफ रेखा

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के बीच निर्धारित की गई है।
- रेडक्लिफ लाइन का निर्धारण 17 अगस्त, 1947 को हुआ था।
- रेडक्लिफ रेखा पर भारत के 3 राज्य और 2 केन्द्र शासित प्रदेश स्थित हैं–

तीन राज्य–

1. पंजाब 2. राजस्थान 3. गुजरात

दो केन्द्र शासित प्रदेश–

1. जम्मू–कश्मीर 2. लद्दाख

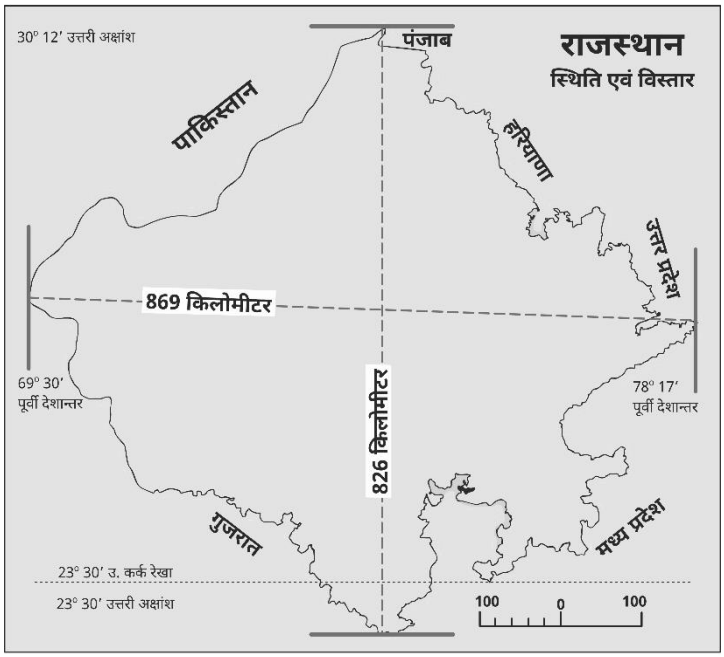

- रेडक्लिफ रेखा की कुल लम्बाई 3,323 किलोमीटर है, जिसमें से राजस्थान के साथ 1,070 किलोमीटर की सीमा लगती है यानी कि कुल रेडक्लिफ का एक–तिहाई भाग राजस्थान के साथ संलग्न है।
- इस अन्तर्राष्ट्रीय रेखा का **निर्धारण** ब्रिटिश 'सर सिरिल रेडक्लिफ' के **द्वारा** किया **गया।**
- अन्तर्राष्ट्रीय रेखा की शुरुआत श्रीगंगानगर जिले के हिन्दूमल कोट से शुरू होकर भागल गाँव**, बाखासर (बाड़मेर)** तक है।
- **रेडक्लिफ रेखा–** भारत और पाकिस्तान के बीच स्थित अन्तर्राष्ट्रीय-सीमा रेखा। अगस्त, 1947 में भारत और पाकिस्तान के विभाजन के समय सीमा का निर्धारण के लिए एक सीमा आयोग बनाया गया था, जिसके अध्यक्ष सर **सिरिल** रेडक्लिफ थे।
- आयोग में कांग्रेस द्वारा मनोनित सदस्य जस्टिस मेहरचन्द महाजन और तेजसिंह थे व मुस्लिम लीग द्वारा मनोनित सदस्य दीन मोहम्मद और मोहम्मद मुनीर थे।
- रेडक्लिफ रेखा विश्व की एकमात्र अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा है जिसका निर्धारण मानचित्र पर कलम से किया गया है।
- रेडक्लिफ रेखा एन. एच. 11 व 911 के समानान्तर और पाकिस्तान की सिन्धू नदी के बहाव के समान्तर स्थित है।
- राजस्थान के 5 जिले अन्तर्राष्ट्रीय रेखा पर स्थित हैं जो कि अवरोही क्रम में इस प्रकार हैं–

1.	जैसलमेर	- 464
2.	बाड़मेर	- 228
3.	श्रीगंगानगर	- 210
4.	बीकानेर	- 168
5	फलोदी	-

नोट -

- राजस्थान के वे जिले, जो केवल अन्तर्राष्ट्रीय सीमा बनाते हैं- (3) बीकानेर, फलोदी, जैसलमेर
- राजस्थान के वे जिले, जो अंतर्राज्यीय सीमा के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा भी बनाते हैं- (2) गंगानगर, बाड़मेर
- श्रीगंगानगर – पाकिस्तान और पंजाब के साथ
- बाड़मेर – पाकिस्तान और गुजरात के साथ
- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के सर्वाधिक निकट जिला मुख्यालय श्रीगंगानगर है।
- सीमावर्ती जिलों में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से सर्वाधिक दूर स्थित जिला मुख्यालय - बीकानेर
- पाकिस्तान सीमा को स्पर्श नहीं करने वाले जिलों में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय – धौलपुर
- पाकिस्तान सीमा के सर्वाधिक निकट शहर – अनूपगढ़
- अनूपगढ़ शहर भारत-पाक सीमा से 15 किमी. दूरी पर स्थित है।

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित संभाग- (2)

- जोधपुर संभाग और बीकानेर संभाग।
- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित संभागों में सर्वाधिक सीमा बनाने वाला संभाग - जोधपुर संभाग।
- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित संभागों में न्यूनतम सीमा बनाने वाला संभाग - बीकानेर संभाग।
- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित संभागों में सर्वाधिक निकट संभागीय मुख्यालय – बीकानेर।
- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित संभागों में क्षेत्रफल की दृष्टि से बड़ा संभाग - जोधपुर संभाग।
- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित संभागों में क्षेत्रफल की दृष्टि से छोटा संभाग - बीकानेर संभाग।

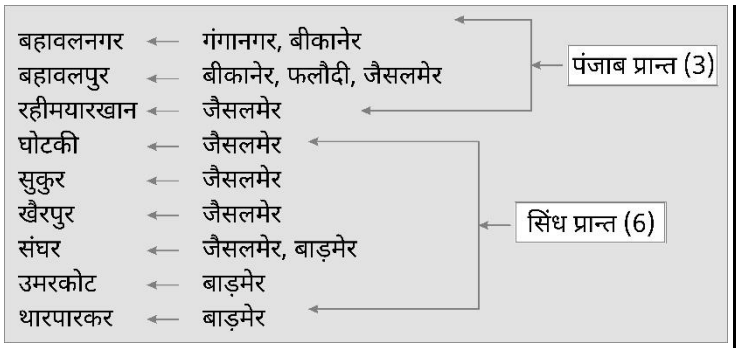

- राजस्थान से सर्वाधिक सीमा बनाने वाला पाकिस्तान का जिला - बहावलनगर
- राजस्थान से न्यूनतम सीमा बनाने वाला पाकिस्तान का जिला- उमरकोट
- राजस्थान की अंतर्राज्यीय सीमा - 4850 कि.मी.।
- राजस्थान की सीमा 5 पड़ौसी राज्यों के 27 जिलों से लगती है।

राजस्थान के पड़ोसी राज्य

अन्तर्राज्यीय-सीमा-

- राजस्थान के उत्तर में पंजाब राज्य है।
- राजस्थान के उत्तर-पूर्व में हरियाणा राज्य है।
- राजस्थान के पूर्व में उत्तर प्रदेश राज्य है।
- राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में मध्य प्रदेश राज्य है।
- राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम में गुजरात राज्य है।

राजस्थान की सीमा को स्पर्श करने वाले पड़ौसी राज्यों के जिले

क्र.स.	पड़ौसी राज्य	सीमा की लम्बाई	जिलों की संख्या	जिलों के नाम	पड़ौसी राज्य के जिलों के नाम
1.	पंजाब	89 किमी. **(न्यूनतम)**	2 जिले	1. श्रीगंगानगर (सर्वाधिक) 2. हनुमानगढ़ (न्यूनतम)	1. फाजिल्का (सर्वाधिक सीमा) 2. मुक्तसर (न्यूनतम सीमा)
2.	हरियाणा	1,262 किमी.	8 जिले	**1. हनुमानगढ़ (सर्वाधिक)** 2. चूरू 3. झुंझुनूँ 4. सीकर 5. कोटपूतली - बहरोड 6. खैरथल – तिजारा **7. अलवर (न्यूनतम)** **8. डीग**	1. सिरसा 2. फतेहाबाद (न्यूनतम सीमा) 3. हिसार 4. भिवानी 5. महेन्द्रगढ़ (सर्वाधिक सीमा) 6. रेवाड़ी 7. मेवात
3.	उत्तर प्रदेश	877 किमी.	3 जिले	**1. डीग (न्यूनतम)** **2. भरतपुर (सर्वाधिक)** **3. धौलपुर**	1. मथुरा (न्यूनतम सीमा) 2. आगरा (सर्वाधिक सीमा)
4.	मध्य प्रदेश	1,600 किमी. (सर्वाधिक)	10 जिले	1.धौलपुर 2. करौली 3. सवाई माधोपुर 4. कोटा 5. बाराँ 6. झालावाड़ (सर्वाधिक) 7. चित्तौड़गढ़ 8. भीलवाड़ा (न्यूनतम) 9. प्रतापगढ़ 10. बाँसवाड़ा	1. मुरैना 2. श्योपुर 3. शिवपुरी 4. गुना 5. राजगढ़ 6. आगर मालवा 7. नीमच (सर्वाधिक सीमा) 8. मन्दसौर 9. रतलाम 10. झाबुआ (न्यूनतम सीमा)
5.	गुजरात	1,022 किमी.	6 जिले	**1. बाड़मेर (न्यूनतम)** **2. जालोर** **3. सिरोही** **4. उदयपुर (सर्वाधिक)** **5. डूँगरपुर** **6. बाँसवाड़ा**	1. दाहोद 2. महीसागर 3. अरावली 4. साबरकांठा 5. बनासकांठा (सर्वाधिक सीमा) 6.कच्छ (न्यूनतम सीमा)।

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

- **शुक्र नीति** - राज्य को मानव शरीर का अंग मानते हुए शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग को शरीर के प्रमुख अंग **'हाथ'** की संज्ञा दी गई है।
- शुक्र नीति के अनुसार **सैन्य दुर्ग सर्वश्रेष्ठ** श्रेणी का **दुर्ग** है।

शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग 9 श्रेणियों के होते हैं-

1. **गिरी दुर्ग** – पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग। राजस्थान के अधिकांश दुर्ग इसी श्रेणी में निर्मित है।
   उदाहरण - मेहरानगढ़(जोधपुर), तारागढ़(अजमेर)।
2. **एरण दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जहाँ तक पहुँचने का मार्ग कठिन और दुर्गम हो।
   उदाहरण - चित्तौडगढ़ और जालौर दुर्ग।
3. **वन दुर्ग –** घने जंगलों में निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - सिवाना का दुर्ग।
4. **धान्वन दुर्ग –** समतल सतह पर निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - जैसलमेर का दुर्ग।
5. **जल दुर्ग –** नदियों के संगम स्थल पर निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - गागरोण दुर्ग।
6. **पारिख दुर्ग –** चारों तरफ गहरी खाई युक्त दुर्ग।
   उदाहरण- भरतपुर दुर्ग, जूनागढ़ दुर्ग।
7. **पारिध दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जिसके चारों तरफ परकोटा हो।
   उदाहरण- चित्तौडगढ़, जैसलमेर दुर्ग।
8. **सैन्य दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जिसमें सैनिक निवास करते हो।
9. **सहाय दुर्ग –** जहाँ सैनिक व आमजन दोनों निवास करते हो।

- राजस्थान में महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश के पश्चात् सर्वाधिक दुर्गों का निर्माण हुआ है।
- राजस्थान में दुर्गों के स्थापना का विकास का प्रथम आधार **कालीबंगा की खुदाई** में मिलता है।

कौटिल्य के अनुसार दुर्ग की 4 श्रेणियाँ है-

- 1. औदुक दुर्ग 2. पर्वत दुर्ग
  3. धान्वन दुर्ग 4. वन दुर्ग
- **चित्तौड़ दुर्ग** धान्वन श्रेणी के दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी का दुर्ग है।

राजस्थान के 6 दुर्ग यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल -

- 1. आमेर दुर्ग 2. गागरोण दुर्ग
  3. कुम्भलगढ़ दुर्ग 4. जैसलमेर दुर्ग
  5. रणथम्भौर दुर्ग 6. चित्तौड़गढ़ दुर्ग।
- ये दुर्ग **जून, 2013** में नोमपेन्ह (कम्बोडिया) में हुई वर्ल्ड हेरिटेज कमेटी की बैठक में यूनेस्को साइट की सूची में शामिल किए गये।

राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग-

- राजस्थान का सबसे प्राचीन दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)
- मिट्टी से निर्मित दुर्ग –
  1. लोहागढ़ दुर्ग 2. भटनेर दुर्ग
- **राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग –**
  1. मोहनगढ़ (जैसलमेर) 2. लोहागढ़ (भरतपुर)
- सर्वाधिक आक्रमण झेलने वाला दुर्ग – तारागढ़ (अजमेर)
- सर्वाधिक विदेशी आक्रमण वाला दुर्ग – भटनेर दुर्ग
- सर्वाधिक गहराई में स्थित दुर्ग – लोहागढ़
- सर्वाधिक बुर्जों वाला किला – सोनारगढ़

सोनारगढ़/जैसलमेर का किला

- जैसलमेर के सोनारगढ़ के नाम से प्रसिद्ध दुर्ग की नींव **जैसल भाटी** ने 1155 ई. में रखी।
- इस दुर्ग का निर्माण शालिवाहन द्वितीय ने पूर्ण करवाया।
- **उपनाम -** सोनगढ़, गौहरारगढ़, त्रिकूटगढ़ एवं 'उत्तर भड़ किवाड़'।
- **प्रकार -** धान्वन श्रेणी का दुर्ग।
- यह त्रिकुट पहाड़ी पर त्रिभुजाकार आकृति में निर्मित है।
- पीले पत्थरों से निर्मित यह किला **राजस्थान का दूसरा बड़ा आवासीय किला है**।
- सोनारगढ़ दुर्ग का निर्माण **चूने का प्रयोग किए बिना पत्थरों को जोड़कर** किया गया है।
- जैसलमेर दुर्ग विश्व का एकमात्र दुर्ग है जिसकी **छत लकड़ी की** बनी हुई है।
- सोनारगढ़ किले का **प्रवेश द्वार अक्षयपोल** कहलाता है।
- सोनारगढ़ किले के पास ही **गढ़ीसर/घडसीसर झील** स्थित है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

(1) **99 बुर्ज-** यह दुर्ग **सर्वाधिक बुर्जों वाला (99 बुर्जे)** किला है।
(2) **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर-** इस दुर्ग का प्रमुख मंदिर **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर** है, जिसमें जैसलमेर शासकों के आराध्य देव की मूर्ति मेड़ता से लाई गई।
(3) इस दुर्ग का प्राचीन मंदिर **आदिनाथ जी (जैन मंदिर)** का है।
(4) जैसलु कुआँ
(5) कमरकोट (घाघरानुमा परकोटा)
(6) **जिनभद्र सूरी भंडार -** यहाँ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ रखे हुए है।
(7) **शीश महल -** दुर्ग में महारावल अखैसिंह द्वारा निर्मित सर्वोत्तम विलास।

ढाई साके-:

- जैसलमेर दुर्ग ढाई साकों के लिए प्रसिद्ध है।
- **प्रथम साका -** जैसलमेर का प्रथम साका भाटी शासक **मूलराज द्वितीय और अलाउद्दीन खिलजी** के मध्य 1312 ई. में हुआ, इसमें मूलराज द्वितीय के नेतृत्व में केसरिया हुआ।
- **दूसरा साका -** जैसलमेर का दूसरा साका **रावल दूदा और दिल्ली के फिरोजशाह तुगलक** के मध्य 1370-71 ई. में हुआ।
- **तीसरा अर्द्ध साका** - 1550 ई. में जैसलमेर शासक राव **लूणकरण और कंधार शासक अमीर अली** के मध्य हुआ। इसमें वीरों ने केसरिया तो किया लेकिन जौहर नहीं हुआ, इसलिए इसे अर्द्ध साका कहा।
- **अबुल फजल** ने इस दुर्ग के बारे में कहा कि "**घोड़ा कीजे काठ का पग किजे पाषाण शरीर राखे बखतरबंद ते पहुँचे जैसाण।"**

नोट-
- राजस्थान इतिहास का यह **एकमात्र अर्द्ध साका** हुआ।
- राजस्थान के इस दुर्ग को **यूनेस्को** ने वर्ष 2013 में **विश्व विरासत** में शामिल किया।
- फिल्म निर्देशक **सत्यजीत रे** द्वारा इस दुर्ग पर '**सोनार किला फिल्म**' का निर्माण किया गया।
- दूर से देखने पर यह दुर्ग पहाड़ी पर "**लंगर डाले एक जहाज का आभास"** कराता है।

भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़)

- इस दुर्ग का निर्माण तीसरी सदी के अन्त (295 ई.) में **भूपत भाटी** द्वारा **सरस्वती या घग्घर नदी** के तट पर करवाया गया था।
- इस दुर्ग का अन्य नाम **'उत्तरी सीमा का प्रहरी'** है।
- **वास्तुकार -** कैकेया।
- **श्रेणी -** धान्वन दुर्ग।
- इस दुर्ग में **52** विशाल बुर्ज हैं।
- किले का निर्माण पक्की हुई ईटों और चूने से हुआ था।
- भटनेर दुर्ग राजस्थान का **सबसे प्राचीन दुर्ग** है।
- भटनेर दुर्ग पर **सबसे अधिक विदेशी आक्रमण** हुए।
- 1003 ई. में **महमूद गजनवी** का प्रथम विदेशी आक्रमण हुआ तथा अंतिम विदेशी आक्रमण 1532-34 ई. का **कामरान** का हुआ।
- यह दुर्ग राजस्थान का एकमात्र ऐसा दुर्ग है जहाँ पर **मुस्लिम महिलाओं ने जौहर** किया। यह जौहर 1398 ई. में हुआ था। उस समय भटनेर का शासक **दूलचंद** था और आक्रमण **तैमूर लंग** का हुआ।
- इस जौहर का प्रमाण तैमूर लंग की आत्मकथा **'तुजुक ए तैमुरी'** में मिलता है।
- **1805 ई.** में बीकानेर शासक **सूरतसिंह** ने भटनेर शासक **जावतासिंह भट्टी** को मंगलवार के दिन पराजित कर इसका नामकरण **हनुमानगढ़** किया।
  इस दुर्ग में बलबन के किलेदार '**शेर खाँ की कब्र**' है।
- भटनेर दुर्ग में एक प्रवेशद्वार पर एक राजा के साथ **6** नारियों की आकृतियाँ बनी हैं।

जूनागढ़ (बीकानेर)

- **निर्माण -** 1589-94 ई. में **रायसिंह** के द्वारा करवाया गया।
- यह किला राती घाटी में '**बीका की टेकरी**' के ऊपर निर्मित दुर्ग है।
- जूनागढ़ का दुर्ग '**धान्वन दुर्ग**' की श्रेणी में आता है।

उपनाम-

(1) जमीन का जेवर

(2) लालगढ़- लाल पत्थरों से निर्मित होने के कारण '**लालगढ़**' भी कहा जाता है।

(3) रातीघाटी का किला।

- यह दुर्ग **सूरसागर झील के किनारे** स्थित है।
- **दुर्ग की आकृति -** चतुष्कोण या चतुर्भुजाकृति।

प्रवेश द्वार -:

- **बाहरी -** कर्णपोल एवं चाँदपोल।
- **भीतरी -** दौलतपोल, फतेहपोल, रतनपोल, सूरजपोल एवं ध्रुवपोल।
- सूरज पोल पर **राजा रायसिंह की प्रशस्ति** उत्कीर्ण है। (**प्रशस्ति रचयिता- जैता**)
- **मुख्य द्वार सूरज पोल** पर गजारूढ़ '**जयमल व फत्ता**' की मूर्तियाँ स्थित है, जो मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह के सेनापति थे।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

(1) अनूप संग्रहालय
(2) फूल महल
(3) चन्द्र महल
(4) लाल निवास
(5) छत्र महल
(6) गंगा निवास महल
(7) दलेल निवास महल
(8) रतन निवास महल।
(9) **दुर्ग में दो कुएँ** - रामसर एवं रानीसर।
(10) 33 **करोड़ देवी-देवताओं का मंदिर -** यहाँ सिंह पर सवार गणपति **(**हेरंब गणपति**)** की दुर्लभ प्रतिमा है।
(11) जूनागढ़ के दुर्ग में **नागणेची माता व लक्ष्मीनारायण जी** का मंदिर है। लक्ष्मीनाराय जी का मंदिर जूनागढ़ का आकर्षक मंदिर है, इसका **निर्माण रतनसिंह** ने करवाया।

- राजस्थान में पहली बार लिफ्ट इसी दुर्ग में लगाई थी।
- **जूनागढ़ दुर्ग के सम्बन्ध में दीनानाथ दुबे की उक्ति** – **'दीवारों के भी कान होते है पर जूनागढ़ के महलों की दीवारें तो बोलती हैं।'**
- यह दुर्ग वास्तव में आगरा के दुर्ग से मिलता-जुलता है।

मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)

- **निर्माण -**1459 ई. में राव जोधा द्वारा करवाया गया।
- दुर्ग की **नींव करणी माता** (रिद्धि बाई) ने रखी।
- **इस दुर्ग की श्रेणी** – गिरि दुर्ग।
- **अवस्थिति -** पंचेटिया पहाड़ी/चिड़िया टुक पहाड़ी पर स्थित है।
- **उपनाम-** कागमुखीगढ़, मयूरध्वज गढ़, जोधा की ढाणी, सूर्यगढ़, गढ़ चिंतामणि, मारवाड़ का सिरमौर।
- इस दुर्ग की नींव में **राजाराम जी मेघवाल** को जीवित चुना गया।
- **प्रवेश द्वार -**
  (**1**) **जयपोल** – उत्तर-पूर्व में मानसिंह द्वारा **1808** ई. में निर्मित।
  (**2**) **फतेहपोल** – दक्षिण-पश्चिम में अजीतसिंह द्वारा **1707** ई. में निर्मित।
  (3) **अन्य प्रवेश द्वार** - ध्रुव पोल, सुरज पोल, इमरत पोल तथा भैरों पोल।
- **मेहरानगढ़ की मुख्य तोपें -** किलकिला, गजनी, शम्भूबाण, गजक, गुब्बार जनजमा, कड़क, बिजली आदि।
- मेहरानगढ़ दुर्ग में पेयजल स्रोतों में **रानीसर तथा पदमसर** तालाब है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-:

प्रमुख महल- दुर्ग के भीतर फ़तेह महल, फूल महल, शृंगार चंवरी महल, मोती महल स्थित हैं। इनमें फूल महल (अभयसिंह द्वारा निर्मित) मेहरानगढ़ का सबसे आकर्षक महल है।

मंदिर:

(1) **चामुण्डा माता का मंदिर-** मेहरानगढ़ दुर्ग में राठौड़ राजवंश की आराध्य देवी **चामुण्डा माता का मंदिर** है, जिसका निर्माण **राव जोधा** द्वारा करवाया गया। 2008 **वर्ष में चामुण्डा मंदिर में भगदड़ मच जाने से कई लोग मारे गये इसकी जाँच हेतु जसराज चोपड़ा कमेटी का गठन किया गया।**

(2) **मुरली मनोहर** (3) **आनंदघनजी**

(4) **राठौड़ों की कुलदेवी नागणेची जी का मंदिर**

अन्य दर्शनीय स्थल-:

- **मामा-भान्जा (धन्ना और भींवा) -** यह छतरी मेहरानगढ़ दुर्ग में लौहा पोल द्वार के पास है। यह **10** खम्भों की छतरी है।
- भूरे खाँ की मजार इसी दुर्ग में है।
- **पुस्तक प्रकाश पुस्तकालय -** इस दुर्ग में महाराजा मानसिंह द्वारा स्थापित पुस्तकालय।
- **वीर कीरतसिंह सोढ़ा** की छतरी इसी दुर्ग में है।
- **श्रृंगार चौकी -** महाराजा तख्तसिंह द्वारा दौलत खाने के आँगन में निर्मित चौकी, जहाँ जोधपुर के राजाओं का राजतिलक होता था।
- **जल स्रोत-** दुर्ग में **राणीसर एवं पद्मसर** तालाब जल के मुख्य स्रोत है। राणीसर तालाब का निर्माण राव जोधा की रानी जसमा हाड़ी ने करवाया था।
- दुर्ग में स्थित संग्रहालय में अकबर की तलवार रखी हुई है।
- इस दुर्ग के बारे में **रुडयार्ड क्लिपिंग** ने कहा कि **"इसका निर्माण तो परियों व फरिश्तों ने करवाया।"**
- **जैकलीन कैनेडी** ने इस दुर्ग को 'दुनिया का आठवाँ अजुबा' कहा।
- राजस्थान का प्रथम दुर्ग जिसमें '**ऑडियो गाइड टूर**' की सुविधा है।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग

- **निर्माण-** चित्तौड़गढ़ दुर्ग के निर्माता चित्रांगद मौर्य (8वीं सदी में निर्मित) थे। (प्रसिद्ध ग्रंथ **'वीर विनोद'** के अनुसार)
- **उपनाम –** दुर्गों का सिरमौर, राजस्थान का गौरव, मालवा का प्रवेश द्वार, दक्षिणी सीमा का प्रहरी, त्याग व बलिदान का दुर्ग।
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग **राजस्थान का सबसे बडा लिविंग फोर्ट** है।
- राजस्थान का **एकमात्र दुर्ग जिसमें खेती** होती है।
- **आकृति -** व्हेल मछली के समान।
- यह दुर्ग चित्तौड़ में **गंभीरी और बेड़च नदियों** के संगम पर स्थित है।
- **श्रेणी एवं पठार- 616** मीटर ऊँचे मेसा पठार पर निर्मित गिरि दुर्ग। यह दुर्ग **'धान्वन दुर्ग'** को छोड़कर शेष सभी **8** श्रेणियों में रखा जा सकता है।
- यह दुर्ग राजस्थान के किलों में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा दुर्ग है। **(क्षेत्रफल – 28** वर्ग किमी.**)**
- यह दिल्ली-मालवा मार्ग पर अवस्थित है।
- **प्रथम विदेशी आक्रमण -** मामू अफगान का।
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग के बारे में **अबुल फजल** ने कहा कि **"गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढैया"**
- **7 प्रवेश द्वार**:- पाडन पोल **(**मुख्य व पहला प्रवेश द्वार**),** भैरव पोल**,** हनुमान पोल**,** गणेश पोल**,** जोड़ला पोल**,** लक्ष्मण पोल**,** रामपोल।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग तीन साके हुए –

1. प्रथम साका

- राजस्थान इतिहास का सबसे बड़ा साका **1303 ई.** में रावल रतनसिंह और अलाउद्दीन खिलजी के बीच हुआ।
- इस साके में रानी पद्मिनी ने जौहर किया।
- चित्तौड़गढ़ में प्रतिवर्ष चैत्र मास में जौहर मेला लगता है।

2. दूसरा साका

- दूसरा साका **1534 ई.** में गुजरात के शासक बहादुरशाह और रावल बाघसिंह के बीच हुआ।
- इस साके में जौहर रानी कर्मावती ने किया।

3. तीसरा साका

- तीसरा साका **1567-68 ई.** में मुगल बादशाह अकबर व फतेहसिंह सिसोदिया के बीच हुआ। इस साके में जौहर फूल कँवर ने किया।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

प्रमुख मंदिर-

- मीरा मंदिर, तुलजा भवानी मंदिर, कालिका माता का मंदिर, श्याम पार्श्वनाथ मंदिर, समद्धिश्वर मंदिर, कुम्भ श्याम मंदिर**,** सतबीश देवरी जैन मंदिर**,** शृंगार चंवरी जैन मन्दिर।

कीर्तिस्तम्भ/जैन प्रशस्ति-

- इसका निर्माण जैन व्यापारी जीजाशाह द्वारा करवाया गया है। कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति की रचना **कवि अत्रि** तथा बाद में **महेश** द्वारा पूरी की गई।
- **विजय स्तम्भ** - दुर्ग के भीतर विजय स्तम्भ भव्य इमारत है।
- **उपनाम- 'विष्णु स्तंभ'** व **'भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश।**
- **निर्माण-** कुंभा ने **1437** ई. में '**सारंगपुर युद्ध**' में महमूद खिलजी प्रथम को पराजित किया**,** इस विजय के उपलक्ष्य में विजय स्तम्भ का निर्माण महाराणा कुम्भा द्वारा **1440** ई. से **1448** ई. करवाया गया।
- यह **9** मंजिला इमारत है जो **30** फीट चौड़ा और **122** फीट ऊँचा है। इसमें कुल **157** सीढ़ियाँ हैं। इसकी तीसरी मंजिल पर **9** बार अल्लाह शब्द लिखा है।
- **सी. वी. वैद्य** ने इसे '**विष्णु स्तंभ**' कहा है तथा **उपेंद्र नाथ डे** ने इसे '**विष्णु ध्वज**' कहा है।
- **गोपीनाथ शर्मा** ने इसे '**लोक जीवन का रंगमंच**' कहा है तथा **आर. पी. व्यास** ने इसे **'हिंदू प्रतिमा शास्त्र की अनुपम निधि**' कहा है।
- **महाराणा स्वरूप सिंह** के समय इसका **जीर्णोद्धार** करवाया गया। फर्ग्यूसन ने इसकी तुलना **'टार्जन टावर'** (**इंग्लैंड**) से की है।
- इसे बनाने की प्रेरणा **बयाना के विष्णु स्तंभ** से मिली।
- **जलापूर्ति के स्रोत -** रत्नेश्वर तालाब**,** कुम्भसागर**,** गोमुख झरना**,** हाथीकुण्ड**,** भीमलत तालाब**,** झालीबाव तालाब।

अन्य दर्शनीय स्थल-

- फतह प्रकाश महल।
- कल्ला राठौड़ की छतरी **(4** खम्भों की छतरी**)**।

- लाखोटा की बारी :- चित्तौड़ दुर्ग की उत्तरी खिड़की।
- रावत बाघसिंह का स्मारक।
- नवलखा बुर्ज (बनवीर द्वारा निर्मित लघु दुर्ग)।

कुम्भलगढ़ दुर्ग (राजसमंद)

- **निर्माण-** इस दुर्ग का निर्माण **महाराणा कुम्भा** ने **1448-1458** ई. में मौर्य शासक सम्प्रति द्वारा निर्मित एक प्राचीन दुर्ग के ध्वंसावशेषों पर **शिल्पी मंडन** की देखरेख में करवाया था।
- **श्रेणी-** मेवाड़ – मारवाड़ सीमा पर राजसमन्द जिले में स्थित **गिरि दुर्ग।**
- यह दुर्ग अरावली पर्वत की **13** ऊँची चोटियों से घिरा दुर्ग है, जो **36** किमी. लम्बे परकोटे से सुरक्षित है। इस दुर्ग की सुरक्षा दीवार इतनी चौड़ी है कि एक साथ **आठ घुड़सवार** चल सकते हैं।
- **उपनाम -** मेवाड़ की तीसरी आँख, मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी, मत्स्येन्द्र, एस्ट्रूस्कन (**कर्नल टॉड**), कुंभलमेरु, कमलमीर आदि।
- **प्रवेश द्वार -** ओरठ पोल, हल्ला पोल, हनुमान पोल, विजय पोल, भैरव पोल, चौगान पोल, पागड़ा पोल और गणेश पोल। (**9** द्वार)

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

- इस दुर्ग में झालीबाव बावड़ी, कुम्भास्वामी, विष्णु मंदिर, मामादेव तालाब, झाली रानी की मालिया आदि अन्य प्रसिद्ध स्मारक निर्मित हैं।
- '**उड़ना राजकुमार की छतरी-** कुंवर पृथ्वीराज की छतरी (**12** खम्भों की छतरी)।
- **कटारगढ़ -** कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित लघु दुर्ग। कटारगढ़ में **महाराणा प्रताप का जन्म** हुआ था। राणा कुम्भा के पुत्र ऊदा ने कटारगढ़ में ही कुम्भा की हत्या की। कटारगढ़ में ही **झाली रानी का मालिया महल** बना हुआ है, इसे '**बादल महल**' भी कहा जाता है।
- इस दुर्ग में **नीलकंठ महादेव का मंदिर** तथा **यज्ञ की प्राचीन वेदी** है।

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य-

- इसी दुर्ग से ही **महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी युद्ध की तैयारी** की थी।
- इस दुर्ग में ही **महाराणा उदय सिंह का राज्याभिषेक** हुआ था।
- इस दुर्ग की ऊँचाई के बारे में **अबुल फजल** ने लिखा है कि "यह इतनी बुलन्दी पर बना हुआ है कि नीचे से ऊपर की ओर देखने पर सिर से पगड़ी गिर जाती है।"

जालोर दुर्ग (सुवर्णगिरि दुर्ग)

- **उपनाम –** जाबालिपुर, जालनगर, सोनगढ़, जलालाबाद, सुवर्णगिरि, कनकाचल।
- **निर्माण -** डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार **नागभट्ट प्रथम** ने (730-756 ई.) **सूकड़ी नदी के किनारे** करवाया।
- दुर्ग का प्रथम प्रवेश द्वार '**सूरजपोल**' है, दूसरा ध्रुवपोल, तीसरा चाँदपोल व चौथा सिरपोल है।

दर्शनीय स्थल-

- **जल स्रोत-** झालर बावड़ी, सोहन बावड़ी व पापड़ बावड़ी स्थित है।
- **मंदिर-** जोगमाया माता मंदिर, चामुंडा माता मंदिर स्थित है।
- इस दुर्ग के सामने **नटनी की छतरी** स्थित है।
- **महल-** मानसिंह महल, रानी महल, नाथावत महल ।
- **अन्य दर्शनीय स्थल-** संत मलिक शाह की दरगाह, परमार कालीन कीर्ति स्तम्भ, 'स्वर्णगिरि' मंदिर (जैन मंदिर), तोपखाना मस्जिद, आशापुरा माता का मंदिर एवं वीरमदेव की चौकी।
- इस किले में बनी तोपखाना मस्जिद पूर्व में परमार शासक भोज द्वारा निर्मित संस्कृत पाठशाला थी।
- जालोर दुर्ग के बारे में **हसन निजामी** ने कहा कि "इस दुर्ग का दरवाजा कोई आक्रमणकारी अब तक नहीं खोल पाया।"

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य-

- प्रतिहार नरेश **वत्सराज** के शासनकाल में **778** ई. में जैन **आचार्य उद्योतन सूरि** ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ **कुवलयमाला** की रचना की।
- **अलाउद्दीन खिलजी** ने कान्हड़देव के समय **1311-12** ई. में जालौर पर आक्रमण कर इस दुर्ग का नाम '**जलालाबाद**' रख दिया।

रणथम्भौर दुर्ग

- **उपनाम –** चित्तौड़गढ़ का छोटा भाई, दुर्गाधिराज, हम्मीर की आन-बान का प्रतीक आदि।
- **निर्माण-** ऐसी मान्यता है कि इस दुर्ग का निर्माण आठवीं शताब्दी में चौहान शासकों (**रणथम्मनदेव चौहान**) ने करवाया था।
- रणथम्भौर का प्राचीन नाम **रन्तःपुर** था, जिसका शाब्दिक अर्थ है **'रण की घाटी'।**
- रणथम्भौर का दुर्ग की **गिरि**, **एरण**, **वन तीनों श्रेणियों** का है।
- **प्रवेश द्वार -** नौलखा दरवाजा, हाथी पोल, गणेश पोल, सूरज पोल, त्रिपोलिया।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

- इस दुर्ग में **पीर सदरुद्दीन की दरगाह** है।
- राजस्थान का सबसे बड़ा **गणेश मंदिर** इस दुर्ग में ही स्थित है, जिसे **रणत भंवर/त्रिनेत्र गणेश मंदिर** के नाम से जानते हैं।
- रणथम्भौर दुर्ग में **32 खम्भों की छतरी** स्थित है, जिसका निर्माण **हम्मीरदेव चौहान** के पिता जयसिन्हा/जैत्रसिंह ने अपने शासनकाल में करवाया।
- **महल-** सुपारी महल, जौरा भौरा महल, हम्मीर महल, जोगी महल, हम्मीर कचहरी स्थित है।
  तालाब- रनिहाड़ तालाब, पद्मला तालाब।
- सुपारी महल (रणथम्भौर) में एक ही स्थान पर मन्दिर, मस्जिद और गिरजाघर स्थित है।

रणथम्भौर दुर्ग का साका-

- इस दुर्ग पर **11 जुलाई, 1301** को **अलाउद्दीन खिलजी** ने आक्रमण किया। हम्मीर विश्वासघात के परिणामस्वरूप लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ तथा उनकी पत्नी रंगदेवी ने जौहर किया, यह राजस्थान का **एकमात्र जल जौहर** था।

राजस्थान का इतिहास

01 प्राचीन सभ्यताएँ

कांस्ययुगीन सभ्यता स्थल

कालीबंगा सभ्यता

- कालीबंगा राजस्थान राज्य के **हनुमानगढ़ जिले** का एक प्राचीन एवं ऐतिहासिक पुरातात्विक स्थल है। यहाँ **सिंधु घाटी सभ्यता** के महत्त्वपूर्ण अवशेष पाए गए हैं।
- कालीबंगा को **कांस्य युगीन** सभ्यता माना जाता है।
- कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ **'काले रंग की चूड़ियाँ/काली चूड़ी'** है। यहाँ मिली तांबे की काली चूड़ियों के कारण ही इस स्थान को 'कालीबंगा' कहा गया।

खोज एवं एवं उत्खनन कार्य -

- सर्वप्रथम **एल. पी. टेस्सीटोरी** ने कालीबंगा की जानकारी दी थी।
- कालीबंगा प्राचीन **सरस्वती नदी (वर्तमान में घग्घर) के बाएँ तट** पर हनुमानगढ़ जिले में स्थित **नगरीय सभ्यता** थी।
- सर्वप्रथम इसकी खोज **वर्ष 1952** में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) के निदेशक **'अमलानंद घोष'** द्वारा सिंधु घाटी सभ्यता के स्थल के रूप में की गई थी।
- कालीबंगा में **वर्ष 1961-1969** तक **बी. बी. लाल तथा बी.के. थापर व एम.डी. खरे** के निर्देशन में उत्खनन कार्य किया गया।
- कालीबंगा में **उत्खनन पाँच स्तरों में** किया गया था, जिसे **कालीबंगा I से V** के रूप में पहचाना गया।
- यहाँ से **प्राक् हड़प्पा (प्रथम व द्वितीय स्तर)** और **विकसित हड़प्पा (तृतीय, चतुर्थ व पंचम स्तर)** के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- **कालीबंगा में वर्तमान समय में तीन टीले प्राप्त हुए हैं-**
  KLB1 – पश्चिम में छोटा
  KLB2 – मध्य में बड़ा
  KLB3 – पूर्व में सबसे छोटा
- कालीबंगा के टीलों पर किए गए उत्खनन कार्य में पश्चिम में स्थित पहला टीला छोटा एवं अपेक्षाकृत ऊँचा है तथा पूर्व में स्थित दूसरा टीला अपेक्षाकृत बड़ा एवं नीचा है।

सभ्यता का काल-

- **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार कालीबंगा सभ्यता का समय **2350** ई.पू. से **1750** ई.पू. माना जाता है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

- हडप्पाकालीन कालीबंगा **दो भागों** में विभाजित था। पश्चिमी भाग ऊँचाई पर बना हुआ था, जिसे दुर्ग कहा जाता था। इसमें प्रशासनिक भवन बने होते थे। पूर्वी भाग अपेक्षाकृत कम ऊँचाई पर था, जिसे निचला नगर कहा जाता था। दोनों भाग अलग-अलग सुरक्षित प्राचीरों से घिरे हुए थे।
- **डॉ. दशरथ शर्मा** ने कालीबंगा को **सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी** कहा है।
  नोट- ध्यातव्य है कि सिंधु सभ्यता की पहली राजधानी हड़प्पा तथा दूसरी मोहनजोदड़ो को माना गया है।
- कालीबंगा देश का **तीसरा सबसे बड़ा पुरातात्विक स्थल** है।
- **नोट-** देश के दो बड़े पुरातात्विक स्थलों में राखीगढ़ी (हरियाणा) एवं धौलावीरा (गुजरात) है।
- कालीबंगा को **'दीन-हीन बस्ती'** भी कहा जाता है।
- कालीबंगा में **मातृसत्तात्मक परिवार** की व्यवस्था विद्यमान थी।
- **पाकिस्तान के कोटदीजी** नामक स्थान पर प्राप्त पुरातात्विक अवशेष कालीबंगा के अवशेषों से काफी मिलते-जुलते हैं।
- संस्कृत साहित्य में कालीबंगा को **'बहुधान्यदायक क्षेत्र'** कहा जाता था।
- कालीबंगा सैंधव सभ्यता का एकमात्र ऐसा स्थल है जहाँ से **मातृदेवी की मूर्तियाँ प्राप्त नहीं** हुई है।
- **वर्ष 1961** में कालीबंगा अवशेष पर भारत सरकार द्वारा **90 पैसे का डाक टिकट** जारी किया गया।
- राज्य सरकार द्वारा कालीबंगा से प्राप्त पुरा अवशेषों के संरक्षण हेतु वर्ष **1985-86 में एक संग्रहालय की स्थापना** की गई।

पुरातात्विक साक्ष्य -

- विश्व में **सर्वप्रथम भूकम्प के साक्ष्य** कालीबंगा से ही मिले हैं।
- विश्व में सर्वप्रथम **लकड़ी की नाली** के अवशेष कालीबंगा से प्राप्त हुए हैं।
- कालीबंगा से उत्खनन में **दोहरे जुते हुए खेत** के अवशेष प्राप्त हुए हैं जो विश्व में जुते हुए खेत के **प्राचीनतम प्रमाण** है।
- कालीबंगा में समकोण दिशा में जुते हुए खेत के साक्ष्य और **ग्रिड पैटर्न** की गर्तधारियों के निशान मिले हैं।
- यहाँ से **एक ही समय में दो फसलें** उगाने के प्रमाण प्राप्त हुए हैं जिसमें गेहूँ तथा जौ एक साथ बोये जाते थे।
- कालीबंगा से **कपालछेदन क्रिया** का प्रमाण मिलता है।
- कालीबंगा से **कलश शवदान** के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- ऐसा माना जाता है कि यहाँ **अंत्येष्टि संस्कार की तीन विधियाँ** प्रचलित थीं, जिसमें पूर्व समाधीकरण, आंशिक समाधीकरण और दाह संस्कार के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा क्षेत्र से **मिट्टी से बना कुत्ता, भेड़िया, चूहा और हाथी की प्रतिमाएँ** मिली हैं।
- कालीबंगा के नगरों की **सड़कें समकोण पर काटती** थी।
- यहाँ के लोग **कच्ची ईंटों से बने मकानों** में रहते थे तथा मकानों की नालियाँ, शौचालय तथा कुछ संरचनाओं में पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया है।
- कालीबंगा में एक दुर्ग, बेलनाकार मुहरें, ताँबे का बैल, जुते हुए खेत, सड़कें तथा मकानों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ का मृद्भाण्ड उद्योग अत्यधिक विकसित था। यहाँ से भागते हुए **बैल की मृण्मूर्ति तथा लाल मृद्भाण्ड**, जिन पर काले व लाल रंग का ज्यामितीय अलंकरण किया हुआ था, प्राप्त हुए है।
- कालीबंगा से **सात अग्निवेदिकाएँ** प्राप्त हुई हैं।
- कालीबंगा में मकानों से गन्दे पानी को निकालने के लिए **लकड़ी की नालियों का प्रयोग** किया जाता था।
- यहाँ से बच्चे की खोपड़ी मिली है जिसमें छह छेद हैं जिसमें **जल कपाली या मस्तिष्क शोध की बीमारी** का पता चलता है।
- कालीबंगा से **मेसोपोटामिया की मिट्टी से निर्मित बेलनाकार मुहर** प्राप्त हुई है।

- कालीबंगा सभ्यता की लिपि सैन्धवकालीन लिपि (**ब्रुस्ट्रोफेदन लिपि)** के समान थी, जो दाएँ से बाएँ की ओर लिखी जाती थी। इस लिपि को अभी तक नहीं पढ़ा जा सका है।
- राजस्थान में कालीबंगा से **विशाल सांडों की जुड़वाँ पैरों वाली मिट्टी की मूर्ति** मिली है।
- **नोट - सोथी सभ्यता-** बीकानेर के आस-पास की सभ्यता को सोथी सभ्यता कहा जाता है। अमलानन्द घोष ने इसे सम्पूर्ण हड़पा सभ्यता का उद्गम स्थल बताया है। इसे **कालीबंगा प्रथम** के नाम से भी जाना जाता है।

बालाथल सभ्यता

- **उदयपुर जिले** की **वल्लभनगर तहसील** के बालाथल गाँव के पास **बनास या बेड़च नदी** के निकट एक टीले के उत्खनन से **ताम्र-पाषाणकालीन सभ्यता** के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ के उत्खनन से प्राप्त मृद्भाण्डों, ताँबे के औजारों और मकानों पर **सिंधु घाटी सभ्यता का प्रभाव** दिखाई देता है, जिससे इस सभ्यता से इसके संपर्क के पुख्ता प्रमाण प्राप्त होते हैं।
- बालाथल में 1800 ईसा पूर्व के लगभग ताम्र पाषाणिक सभ्यता तथा 600 ईसा पूर्व के लगभग लौहयुगीन सभ्यता के आबाद होने का पुरातत्वशास्त्रियों का अनुमान है।
- **सभ्यता का काल-** 1900-1700 ई. पूर्व।

खोज एवं उत्खनन कार्य

- इस सभ्यता की खोज **वर्ष 1962-63 में डॉ. वी. एन. मिश्र** द्वारा की गई।
- वर्ष 1993 में **डॉ. वी. एस. शिंदे, आर. के. मोहन्ते, डॉ. देव कोठारी एवं डॉ. ललित पाण्डे** ने इस सभ्यता का उत्खनन किया था।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- बालाथल में उत्खनन से एक **11 कमरों के विशाल भवन** के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ से **लोहा गलाने की पाँच भट्टियों** के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ के लोग बर्तन बनाने तथा कपड़ा बुनने के बारे में जानकारी रखते थे।
- यहाँ से पाँचवीं सदी ईसा पूर्व का **हाथ से बुना कपड़े का टुकड़ा** प्राप्त हुआ है।
- पत्थर के मनके, पक्की मिट्टी की मूर्तियाँ, पशु आकृतियाँ, ताँबे के औजार।
- बालाथल के उत्खनन में मिट्टी से बनी **सांड की आकृतियाँ** मिली हैं।
- बालाथल निवासी **मांसाहारी** भी थे।
- यहाँ से **4000 वर्ष पुराना कंकाल** मिला है जिसको भारत में **कुष्ठ रोग का सबसे पुराना प्रमाण** माना जाता है।
- यहाँ से **योगी मुद्रा में शवाधान** का प्रमाण प्राप्त हुआ।
- बालाथल में अधिकांश आभूषण व उपकरण तांबे के बने प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ के लोग **कृषि, शिकार तथा पशुपालन** आदि से परिचित थे।
- बालाथल से प्राप्त बैल व कुत्ते की मृण्मूर्तियाँ विशेष उल्लेखनीय है।

ताम्रयुगीन सभ्यता स्थल

गणेश्वर सभ्यता

- गणेश्वर सभ्यता **नीमकाथाना क्षेत्र (सीकर) में रैवासा गाँव की खंडेला पहाड़ियों** में स्थित ताम्रयुगीन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थल है।
- गणेश्वर सभ्यता **कांतली नदी के किनारे** विकसित प्राक् हड़प्पा कालीन सभ्यता मानी जाती है।
- गणेश्वर को **'पुरातत्व का पुष्कर'** भी कहा जाता है।

खोज-उत्खनन कार्य एवं काल

- **रेडियोकार्बन विधि** के आधार पर इस स्थल की तिथि **2800 ईसा पूर्व** निर्धारित की गई।
- गणेश्वर सभ्यता की खोज एवं सर्वप्रथम उत्खनन कार्य वर्ष 1977 में **रतनचंद्र अग्रवाल** द्वारा किया गया।
- इस सभ्यता स्थल पर व्यापक उत्खनन कार्य **वर्ष 1978-79 में विजय कुमार द्वारा** करवाया गया।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- गणेश्वर को भारत में **'ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी'** तथा **'ताम्र संचयी संस्कृति'** भी कहा जाता है।
- भारत में पहली बार किसी स्थान से इतनी मात्रा में ताम्र उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- गणेश्वर सभ्यता के लोग संभवत: **ताँबा खेतड़ी व अलवर की खो-दरीबा खान** से प्राप्त करते थे।
- यहाँ से प्राप्त तांबे के उपकरणों व पात्रों में **99 प्रतिशत तांबा** है, जो इस क्षेत्र में तांबे की प्रचुर प्राप्ति का प्रमाण है।

पुरातात्विक अवशेष

- गणेश्वर के उत्खनन से लगभग **2000 ताम्र आयुध व ताम्र उपकरण** प्राप्त हुए हैं, जिनमें तीर, भाले, सूइयाँ, कुल्हाड़ी, मछली पकड़ने के कांटे आदि शामिल हैं।
- गणेश्वर में बस्ती को बाढ़ से बचाने हेतु वृहदाकार पत्थर के **बाँध बनाने के प्रमाण।**
- ताँबे का बाण एवं मछली पकड़ने का कांटा।
- काले व नीले रंग के कपिषवर्णी मृद्पात्र।
- गणेश्वर से **मिट्टी के छल्लेदार बर्तन** भी प्राप्त हुए हैं।
- मिट्टी के छल्लेदार बर्तन, जो केवल गणेश्वर में ही प्राप्त हुए हैं।
- दोहरी पेचदार शिरेवाली ताम्रपिन।

आहड़ सभ्यता

- आहड़ **उदयपुर नगर/मेवाड़ क्षेत्र** के पूर्व में बहने वाली **आयड़/बेड़च नदी के तट** पर स्थित एक पुरातात्विक स्थल है, जिसका विकास **बनास नदी घाटी** में माना जाता है।
- आहड़ **ताम्रयुगीन सभ्यता** है, जो लगभग **4000 वर्ष पूर्व** की सभ्यता मानी जाती है।
- दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी में इसे **आघाटपुर या आघट दुर्ग** के नाम से जाना जाता था।
- इसे प्राचीनकाल में **ताम्रवती नगरी भी** कहा जाता था। वर्तमान में इसका नाम **धूलकोट (मिट्टी का टीला)** है।
- डॉ. सांकलिया ने इसे **'आहड़ या बनास संस्कृति'** कहा है।
- आहड़ एक **ग्रामीण सभ्यता** थी।

खोज एवं काल

- आहड़ सभ्यता की खोज **वर्ष 1953 में पं. अक्षय कीर्ति व्यास** के नेतृत्व में की गई थी।
- **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** ने आहड़ सभ्यता का समृद्ध काल 1900 ई. पू. से 1200 ई.पू. तक माना है।
- **कार्बन-14** वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार आहड़ सभ्यता का काल **2000 ई. पू. से 1200 ई. पू.** के मध्य माना जाता है।

उत्खनन कार्य

- आहड़ सभ्यता पर सर्वप्रथम लघु स्तर पर उत्खनन कार्य **पं. अक्षय कीर्ति व्यास** द्वारा किया गया।
- **वर्ष 1954** में **रतन चंद्र अग्रवाल** के नेतृत्व यहाँ पर व्यापक स्तर पर उत्खनन कार्य करवाया गया। **आर.सी. अग्रवाल** ने आहड़ के पास दूरमतून एवं उमरा नामक स्थानों से ताम्र शोधन के साक्ष्य प्राप्त किए हैं।
- **वर्ष 1961-62** में यहाँ **वी. एन. मिश्रा एवं एच. डी. सांकलिया** द्वारा यहाँ उत्खनन करवाया गया।
- आहड़ के उत्खनन अभियान के समय राजस्थान सरकार की ओर से **विजय कुमार एवं पी. सी. चक्रवर्ती** भी उपस्थित रहे।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- आहड़ के उत्खनित स्थल को **महासत्तियों का टीला** कहा जाता है।
- गिलूण्ड (राजसमन्द) से आहड़ के समान धर्म संस्कृति मिली है।
- आहड़वासी **ताम्रधातु** कर्मी थे।
- आहड़ के लोग मृतकों को कपड़ों एवं आभूषण के साथ गाड़ते थे।
- आहड़वासी **लाल एवं काले रंग के मृद्पात्रों** का उपयोग करते थे।
- आहड़वासी धूप में सुखाई गई कच्ची ईंटों से मकानों का निर्माण करते थे।
- आहड़वासी **कृषि (चावल की खेती) एवं पशुपालन (कुत्ता, हाथी आदि)** से परिचित थे।
- आहड़ से प्राप्त एक ही मकान में **4 से 6 चूल्हों** का प्राप्त होना जिस पर एक मानव हथेली की छाप है एवं **संयुक्त परिवार व्यवस्था** की ओर संकेत करते हैं।
- आहड़ सभ्यता के लोग मिट्टी के बर्तन पकाने की **उल्टी तिपाई विधि** से परिचित थे।

पुरातात्विक सामग्रियाँ-

- **आहड़ से प्राप्त पुरातात्विक सामग्रियों में प्रमुख-**
  1. नारी की खण्डित मृण्मूर्ति
  2. छपाई के ठप्पें
  3. अनाज पीसने की चक्की
  4. चित्रित बर्तन एवं ताँबे के उपकरण
  5. दो ताँबे की कुल्हाड़ियाँ
  6. ताँबे की छह मुद्राएँ तथा तीन मुहरें
  7. **एक मुद्रा** जिसके एक ओर त्रिशूल तथा दूसरी ओर **अपोलो देवता का चित्रण** है तथा **यूनानी भाषा** में लेख भी अंकित है।
  8. **अनाज रखने के मृद्भांड**, जिन्हें स्थानीय भाषा में **'गोरे' या 'कोठे'** कहा जाता है।
  9. मिट्टी की बनी टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ
  10. बिना हत्थे का जलपात्र (**ईरानी सभ्यता** की जानकारी प्राप्त)
  11. बैल की मृणमूर्ती (बनासियन बुल)

गिलुण्ड (राजसंमद)

- **उत्खनन -** 1957-58 में बृजबासी लाल, वी. एस. शिन्दे, ग्रेगरी पोशल द्वारा दो टीलों का।
- यह एक **ताम्रयुगीन सभ्यता** है।
- इसे स्थानीय भाषा में **मोडिया मगरी** कहा जाता है।
- आहड़ के विपरीत यहाँ पक्की ईंटें भी प्राप्त हुई है।
- यहाँ से **पाँच प्रकार के मृद्भाण्ड** (सादे, काले, पॉलिशदार, लाल, काले चित्रित) प्राप्त हुए है।
- यहाँ से **मिट्टी के खिलौने** (हाथी, ऊँट, कुत्ता), पत्थर की गोलियाँ तथा हाथी दाँत की चूड़ियाँ प्राप्त हुई है।

रंगमहल (हनुमानगढ़)

- **अवस्थिति-** रंगमहल हनुमानगढ़ जिले में सरस्वती (वर्तमान में घग्घर) नदी के पास।
- यह एक **ताम्रयुगीन सभ्यता** है।
- **उत्खनन कार्य** - **डॉ. हन्नारिड** के निर्देशन में स्वीडिश दल द्वारा वर्ष 1952-54 में किया गया।

पुरातात्विक साक्ष्य-

- यहाँ से **कुषाणकालीन तथा** उससे **पहले की 105 ताँबे की मुद्राएँ** प्राप्त हुई है जिनमें कुछ पंचमार्क मुद्राएँ भी है।
- यहाँ से ब्राह्मी लिपि में नाम अंकित दो कांसे की सीलें भी प्राप्त हुई है।
- यहाँ के निवासी मुख्य रूप से **चावल की खेती** करते थे।
- यहाँ के मकानों का निर्माण ईंटों से होता था।
- यहाँ से प्राप्त **मृद्भाण्ड मुख्यत: लाल या गुलाबी रंग** के थे।
- यहाँ से गांधार शैली की मृण्मूर्तियाँ, टोटीदार घड़े, घण्टाकार मृद्पात्र एवं कनिष्क कालीन मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं।
- **रंगमहल** से ही गुरु-शिष्य की मिट्टी की मूर्ति प्राप्त हुई है।
- इसे **कुषाणकालीन सभ्यता के समान** माना जाता है।
- **रंगमहल** में बसने वाली बस्तियों के तीन बार बसने एवं उजड़ने के प्रमाण मिले हैं।

मलाह (भरतपुर)

- यह स्थल भरतपुर जिले के **घना पक्षी अभयारण्य** में स्थित है।
- इस स्थल से अधिक संख्या में ताँबे की तलवारें एवं हार्पून प्राप्त हुए हैं।

कुराड़ा (नागौर)

- यह **ताम्रयुगीन सभ्यता स्थल** है।
- यहाँ से ताम्र उपकरणों के अतिरिक्त प्रणालीयुक्त अर्घ्यपात्र प्राप्त हुआ है।

किराड़ोत (जयपुर)

- इस सभ्यता स्थल से **ताम्रयुगीन 56 चूड़ियाँ** प्राप्त हुई है। इसमें अलग-अलग आकार की 28 चूड़ियों के 2 सेट प्राप्त हुए हैं।

ओझीयाणा (भीलवाड़ा)

- **अवस्थिति-** बदनोर के पास खारी नदी के तट पर स्थित।
- **उत्खनन -** बी. आर. मीणा तथा आलोक त्रिपाटी द्वारा (1999-2000 में)
- यहाँ से **बैल तथा गाय की मृण मूर्तियाँ** प्राप्त हुई है।

- यहाँ से प्राप्त अवशेषों के आधार पर इस **संस्कृति का विकास तीन चरणों में** हुआ है।
- इस सभ्यता का काल 2500 ईसा पूर्व से 1500 ईसा पूर्व तक माना जाता है।

लौह युगीन सभ्यता स्थल

बैराठ सभ्यता

- बैराठ जयपुर जिले में **शाहपुरा उपखण्ड में बाणगंगा नदी के किनारे** स्थित लौहयुगीन स्थल है।
- प्राचीन मत्स्य जनपद में स्थित **बैराठ की बीजक की पहाड़ी, भीम की डूंगरी व महादेव जी की डूंगरी** से हड़प्पा सभ्यता व मौर्यकाल के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- बैराठ का प्राचीन नाम **'विराटनगर'** था। महाजनपद काल में यह मत्स्य जनपद की राजधानी था।

खोज एवं उत्खनन कार्य

- बैराठ सभ्यता की खोज **वर्ष 1922 में दयाराम साहनी** के नेतृत्व में की थी।
- यहाँ पर दो स्तरों में प्रथम वर्ष **1936-37 में दयाराम साहनी** द्वारा तथा **वर्ष 1962-63 में नीलरत्न बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित** द्वारा उत्खनन कार्य किया गया।
- बैराठ सभ्यता के लोगों का जीवन पूर्णत: ग्रामीण संस्कृति का था।

बैराठ सभ्यता की मुख्य विशेषताएँ

- यहाँ से **मौर्यकालीन** तथा इसके बाद के समय के अवशेष मिले हैं।
- **उत्तर भारतीय चमकीले मृद्भांड वाली संस्कृति** का प्रतिनिधित्व करने वाला राजस्थान में सबसे महत्त्वपूर्ण प्राचीन स्थल बैराठ है।
- बैराठ सभ्यता के लोग लौह धातु से परिचित थे। यहाँ उत्खनन से **लोहे के तीर तथा भाले** प्राप्त हुए हैं।
- यह सभ्यता स्थल **प्राचीन बौद्ध अवशेषों** के लिए प्रसिद्ध है।
- 7वीं सदी में **चीनी यात्री ह्वेनसांग** ने यहाँ की यात्रा की थी। उसने यहाँ **8 बौद्ध मठों** का उल्लेख किया।
- बैराठ से **'शंख लिपि'** के प्रमाण प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से **मुगलकाल में टकसाल** होने के प्रमाण मिलते हैं। यहाँ मुगल काल में ढाले गये सिक्कों पर **'बैराठ अंकित'** मिलता है।
- यहाँ भवन निर्माण के लिए मिट्टी की बनाई ईंटों का प्रयोग अधिक किया जाता था।

पुरातात्विक अवशेष

- यहाँ से **36 मुद्राएँ** प्राप्त हुई हैं जिनमें 8 पंचमार्क चाँदी की तथा 28 इण्डो-ग्रीक तथा यूनानी शासकों की हैं, जिनमें 16 मुद्राएँ यूनानी शासक मिनेण्डर की है।
- वर्ष 1999 में बीजक की पहाड़ी से **अशोक कालीन गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ** के अवशेष मिले हैं जो हीनयान सम्प्रदाय से संबंधित है।
- बैराठ में पाषाणकालीन हथियारों के निर्माण का एक बड़ा कारखाना स्थित था।
- बैराठ के उत्खनन से मिट्टी के बने पूजा पात्र, थालियाँ, लोटे, मटके, खप्पर, कुंडियाँ, घड़े आदि मिले हैं।
- बैराठ की बीजक पहाड़ी से **1837 ई. में कैप्टन बर्ट** को बैराठ की बीजक पहाड़ी से मौर्य सम्राट **अशोक के भाब्रू शिलालेख** प्राप्त हुआ, जिस पर मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि उत्कीर्ण है।

भाब्रू शिलालेख

- वर्तमान में भाब्रू शिलालेख कलकत्ता संग्रहालय (एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल) में सुरक्षित है।
- भाब्रू शिलालेख में सम्राट अशोक को 'मगध का राजा' नाम से संबोधित किया गया है।
- भाब्रू शिलालेख के नीचे बुद्ध, धम्म एवं संघ लिखा हुआ है।

नगरी (चित्तौड़गढ़)

- बेड़च नदी के तट पर स्थित है और जिसका प्राचीन नाम मध्यमिका है।

उत्खनन-

- यहाँ का पहला उत्खनन कार्य 1904 में **डॉ. डी. आर. भण्डारकर** द्वारा किया गया, इसके बाद **1962-63 में केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग** ने और खुदाई की।

खोज-

- नगरी की खोज **1872 में कार्लाइल** द्वारा की गई थी।
- यहाँ से **शिवि जनपद के सिक्के और गुप्तकालीन कला** के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाते हैं।
- **'मध्यमिका'** का उल्लेख **पतंजलि के महाभाष्य ग्रंथ** में मिलता है, जो इस स्थल की ऐतिहासिक महत्ता को बढ़ाता है।
- **घोसुण्डी अभिलेख**- यहाँ से द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व का घोसुण्डी अभिलेख भी मिला है, जो उस समय की लेखन प्रणाली और प्रशासनिक व्यवस्था का परिचायक है।
- **नगरी शिवि जनपद की राजधानी** रही है, जो इसे राजनीतिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण बनाता है।
- यहाँ से चार चक्राकार कुएँ भी प्राप्त हुए हैं, जो प्राचीन जल प्रबंधन की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं।

रैढ़ (टोंक)

- रैढ़, टोंक जिले की निवाई तहसील में **ढील नदी** के किनारे स्थित पुरातात्त्विक स्थल है।
- यह एक **लौह युगीन सभ्यता** है।

उत्खनन-

- यहाँ पर उत्खनन कार्य **वर्ष 1938-39 में दयाराम साहनी** के नेतृत्व में तथा अंतिम रूप में उत्खनन कार्य **डॉ. केदारनाथ पुरी** के द्वारा करवाया गया।
- रैढ़ के उत्खनन से बड़ी मात्रा में मिलने वाले लौह उपकरणों तथा मुद्राओं के कारण इसे '**प्राचीन भारत का टाटानगर'** कहा जाता है।

पुरातात्विक साक्ष्य-

- यह एक धातु केंद्र था जहाँ पर औद्योगिक कार्य एवं निर्यात हेतु उपकरण एवं औजार बनाए जाते थे।
- रैढ़ में उत्खनन से लगभग **3075 आहत मुद्राएँ** तथा 300 मालव जनपद के सिक्के प्राप्त हुए है। यहाँ से यूनानी शासक **अपोलोडोट्स** का एक खण्डित सिक्का भी प्राप्त हुआ है।

राजस्थान का सामान्य ज्ञान

राजस्थान के प्रतीक चिह्न			
राज्य पक्षी	गोडावण	ओर्डियोटिस नाइग्रीसैप्र कोरियटस नाइग्रीसेप्स	1981
राज्य पशु	वन्य जीव श्रेणी चिंकारा	गजेला बभेट्टी/गजेला-गजेला	1981
	पशुधन श्रेणी ऊँट	केमेलस डोमेडेरियस	2014
राज्य वृक्ष	खेजड़ी	प्रोसेपिस सिनेरेरिया	1983
राज्य पुष्प	रोहिड़ा का फूल	टिकोमेला अनड्यूलेटा	1983
राज्य खेल	बास्केटबॉल		1948
राज्य नृत्य	घूमर		

राज्य वृक्ष - खेजड़ी

- रेगिस्तान का गौरव अथवा थार का कल्पवृक्ष जिसका वैज्ञानिक नाम "प्रोसेसिप-सिनेरेरिया" है। इसको 1983 में राज्य वृक्ष घोषित किया गया।
- 5 जून, 1988 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर खेजड़ी वृक्ष पर 60 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया।
- खेजड़ी के वृक्ष सर्वाधिक शेखावटी क्षेत्र में देखे जा सकते है तथा नागौर जिले में सर्वाधिक है। इस वृक्ष की पूजा विजयाशमी/दशहरे पर की जाती है। खेजड़ी के वृक्ष के निचे गोगाजी व झुंझार बाबा का मंदिर/थान बना होता है। खेजड़ी को पंजाबी व हरियाणावी में जांटी व तमिल भाषा में पेयमेय कन्नड़ भाषा में बन्ना-बन्नी, सिंधी भाषा में - धोकड़ा व बिश्नोई सम्प्रदाय के लोग शमी के नाम से जानते है। स्थानीय भाषा में सीमलो कहते हैं।
- खेजडी की हरी फली-सांगरी, सुखी फली- खोखा, व पत्तियों से बना चारा लुंग/लुम कहलाता है।
- खेजड़ी के वृक्ष को सेलेस्ट्रेना (कीड़ा) व ग्लाइकोट्रमा (कवक) नामक दो कीड़े नुकसान पहुँचाते है।

राज्य पशु – चिंकारा

- चिंकारे को राज्य पशु की मान्यता 22 मई, 1981 में मिली।
- इसका वैज्ञानिक नाम गजेला-गजेला है।
- चिंकारा एण्टीलोप प्रजाति का जीव है।
- चिंकारों के लिए नाहरगढ़ अभयारण्य (जयपुर) प्रसिद्ध है।

ऊँट-

- राजस्थान सरकार ने 30 जून, 2014 को ऊँट को राजस्थान के राज्य पशु का दर्जा दिया था। जिसकी घोषणा 19 सितम्बर 2014 को बीकानेर में की गई।
- राजस्थान में सर्वाधिक ऊँटों वाला जिला है।
- राजस्थान में ऊँटों की नस्लें – गोमठ ऊँट, नाचना ऊँट, जैसलमेरी ऊँट, अलवरी ऊँट, सिंधी ऊँट, कच्छी ऊँट, बीकानेरी।

राज्य पक्षी गोडावण

- गोडावण को राज्य पक्षी की मान्यता 21 मई, 1981 में मिली।
- इसका वैज्ञानिक नाम क्रायोटिस नाइग्रीसेप्स है।
- गोडावण को अंग्रेजी में ग्रेट इण्डियन बस्टर्ड बर्ड कहा जाता है।
- गोडावण को स्थानीय भाषा में सोहन चिड़ी, शर्मिला पक्षी कहा जाता है।
- गोडावण के अन्य उपनाम- सारंग, हुकना, तुकदर व गुधनमेर है।
- गोडावण को हाड़ौती क्षेत्र में मालमोरड़ी कहा जाता है।
- राजस्थान में गोडावण सर्वाधिक पाया जाता है- सोरसन (बारां), सोंकलिया (अजमेर), मरूद्यान (जैसलमेर, बाड़मेर)।
- गोडावण के संरक्षण हेतु राज्य सरकार ने विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2013 को राष्ट्रीय मरू उद्यान, जैसलमेर में प्रोजेक्ट ग्रेट इंडियन बस्टर्ड प्रारंभ किया। यह प्रोजेक्ट प्रारंभ करने वाला राजस्थान, भारत का प्रथम राज्य है।

राज्य पुष्प - रोहिडा का फुल

- रोहिडा के फुल को 21 अक्टूबर 1983 को राज्य पुष्प घोषित किया गया। इसे "मरूशोभा" या "रेगिस्थान का सागवान" भी कहते है। इसका वैज्ञानिक नाम "टिकोमेला अंडुलेटा" है।
- रोहिड़ा सर्वाधिक राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में देखा जा सकता है। रोहिड़े के पुष्प मार्च-अप्रैल के महिने में खिलते है।

राज्य नृत्य - घूमर

- घूमर का अर्थ घूमकर नाचना होता है।
- उपनाम - राज्य नृत्यों का सिरमौर, राजस्थानी नृत्यों की आत्मा।
- घूमर भील जनजाति का पारंपरिक लोक नृत्य है। जिसे वर्तमान में सभी समुदायों द्वारा किया जाता है।
- यह महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
- घूमर नृत्य को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1986 में राजस्थान में गणगौर घूमर नृत्य अकादमी स्थापित की गई।
- नोट- राजस्थान सरकार की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार राज्य में उपरोक्त सात प्रतीक चिह्न ही हैं। लेकिन अन्य स्त्रोतों के अनुसार निम्न को भी प्रतीक चिह्न में शामिल किया गया है।

राज्य शास्त्रीय नृत्य- कत्थक

- उत्तरी भारत में कथक शास्त्रीय नृत्य प्रचलित है। इस नृत्य के दो घराने प्रसिद्ध है- जयपुर घराना एवं लखनऊ घराना।
- कथक नृत्य की उत्पति जयपुर से हुई मानी जाती है। यह नृत्य में तबला एवं पखवाज जैसे प्रमुख वाद्ययंत्रों के साथ किया जाता है।
- राजस्थान में प्रचलित एकमात्र शास्त्रीय नृत्य कथक ही है।

कथक नृत्य के प्रमुख कलाकर- बिरजू महाराज, सतारा देवी, गोपी कृष्ण, मालविका मित्रा, रोहिणी भाटे, रोशन कुमारी पं. दुर्गालाल ।

राज्य लोक वाद्य यंत्र- अलगोजा

- यह सुषिर वाद्य यंत्र हैं।

- यह वाद्य मुँह से सीटी बजाने की प्रक्रिया का विकसित रूप है।
- इसमें चार छेदों वाली दो बाँसुरी होती है।
- रामनारायण चौधरी नाक से अलगोजा बजाने के लिए प्रसिद्ध है।
- इसे कोटा, बूँदी, अजमेर व अलवर क्षेत्र के गूजर, मेव एवं धाकड़ जाति के लोग इसे बजाते है।

राज्य लोक गीत - केसरिया बालम आओ नी पधारो म्हारे देश

- यह मांड गायन शैली में गाया गया।
- इसे ख्याति मांड गायिका अल्लाह जिलाई बाई ने दिलवाई।
- यह एक विरह गीत है।

राज्य कवि- सूर्यमल्ल मीसण

- इनको राजस्थानी कवियों में नवजागरण का प्रथम कवि माना है
- प्रमुख ग्रंथ वंश भास्कर, बलवंत विलास, वीर सतसई, छंद मयूख, बुद्धसिंह चरित
- नोट- वंश भास्कर में बूँदी राज्य का ऐतिहासिक वर्णन है। इसे सूर्यमल्ल मीसण के दत्तक पुत्र मुरारीदान ने पुरा किया था।

राज्य खेल - बास्केटबॉल

- वर्ष 1948 में बास्केटबॉल को राज्य खेल का दर्जा दिया गया।
- इस खेल में प्रत्येक टीम में 5 खिलाड़ी होते है।
- अंतर्राष्ट्रीय खेलों में निर्धारित बास्केटबॉल कोर्ट 28 × 15 मीटर होता है।

अभ्यास प्रश्न

1. राज्य वृक्ष खेजड़ी को किस वर्ष राजस्थान राज्य वृक्ष घोषित किया गया?
(a) 1981
(b) 1983
(c) 1985
(d) 1988

2. खेजड़ी का वैज्ञानिक नाम क्या है?
(a) क्रायोटिस नाइग्रीसेप्स
(b) टिकोमेला अंडुलेटा
(c) प्रोसेसिप-सिनेरेरिया
(d) गजेला-गजेला

3. खेजड़ी पर डाक टिकट कब जारी किया गया था?
(a) 22 मई, 1981 (b) 30 जून, 2014
(c) 5 जून, 1988 (d) 21 अक्टूबर, 1983

4. राज्य पशु चिंकारा का वैज्ञानिक नाम है –
(a) क्रायोटिस नाइग्रीसेप्स (b) गजेला-गजेला
(c) एंटीलोप इंडिका (d) डेजर्ट डीयर

5. राजस्थान में ऊँट को राज्य पशु का दर्जा कब दिया गया?
(a) 1981 (b) 2013
(c) 2014 (d) 2015

6. राज्य पक्षी गोडावण का वैज्ञानिक नाम क्या है?
(a) टिकोमेला अंडुलेटा
(b) क्रायोटिस नाइग्रीसेप्स
(c) बस्टर्डस इंडिकस
(d) अविस ग्रांडी

7. गोडावण के संरक्षण के लिए प्रोजेक्ट 'ग्रेट इंडियन बस्टर्ड' कब शुरू हुआ?
(a) 1981 (b) 1983
(c) 2013 (d) 2015

8. राज्य पुष्प 'रोहिडा' का वैज्ञानिक नाम है –
(a) टिकोमेला अंडुलेटा
(b) एंटीलोप रोहिडा
(c) प्रोसेसिप अंडुलेटा
(d) फ्लोरा मरुथान

9. 'गणगौर घूमर नृत्य अकादमी' की स्थापना कब हुई थी?
(a) 1983 (b) 1985
(c) 1986 (d) 1988

10. राज्य शास्त्रीय नृत्य कौन-सा है?
(a) भरतनाट्यम (b) कथक
(c) कुचिपुड़ी (d) ओडिसी

11. राज्य लोक वाद्य यंत्र 'अलगोजा' किस श्रेणी में आता है?
(a) तंतु वाद्य (b) सुषिर वाद्य
(c) अवनाद वाद्य (d) घन वाद्य

12. राज्य लोक गीत 'केसरिया बालम' किस गायन शैली में गाया गया है?
(a) पिंगल (b) ढोला
(c) भवई (d) मांड

13. राज्य कवि सूर्यमल्ल मीसण ने किस ग्रंथ में बूँदी राज्य का ऐतिहासिक वर्णन किया है?
(a) वीर सतसई
(b) बलवंत विलास
(c) वंश भास्कर
(d) छंद मयूख

14. राज्य खेल बास्केटबॉल को कब राज्य खेल घोषित किया गया?
(a) 1947
(b) 1948
(c) 1950
(d) 1965

15. राज्य पक्षी गोडावण को स्थानीय भाषा में क्या कहा जाता है?
(a) सरस
(b) शर्मिला पक्षी
(c) धोकड़ा
(d) पेंगुल

ANSWER KEY				
1. [b]	2. [c]	3. [c]	4. [b]	5. [c]
6. [b]	7. [c]	8. [a]	9. [c]	10. [b]
11. [b]	12. [d]	13. [c]	14. [b]	15. [b]

♦♦♦♦

02 राजस्थान में राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाएँ

– राज्य सरकार ने समाज के कमजोर वर्गों के व्यक्तियों के सशक्तीकरण तथा उन्हें विकास की मुख्य धारा में लाने के उद्देश्य हेतु राज्य सरकार द्वारा राज्य निधि से संचालित व केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं/कार्यक्रमों में से निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के 25 फ्लैगशिप कार्यक्रम घोषित किये गये –

क्र.	योजना का नाम	योजना के प्रमुख घटक	विभाग
1.	**नवीन परिवारों को NFSA से लाभान्वित करना**	छूटे हुए एवं पात्र परिवारों को लाभान्वित के रूप में जोड़ना	खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति
2.	**कुसुम योजना-घटक ए, बी एवं सी**	घटक एः- ग्रिड से जुड़े 2 मेगावाट क्षमता तक के सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना। घटक बीः- 7.5 एचपी क्षमता तक के स्वतंत्र सौर कृषि पंपों की स्थापना। घटक सीः- ग्रिड से जुड़े 7.5 एचपी क्षमता तक के मौजूदा कषि पंपों का सौर ऊर्जा से संचालन।	ऊर्जा विभाग
3.	**संशोधित वितरण क्षेत्र योजना (Revamped Distribution Sector Scheme RDSS)**	विद्युत आपूर्ति के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए किये गए विभिन्न कार्य	ऊर्जा विभाग
4.	**लाडो प्रोत्साहन योजना**	गरीब परिवारों की बालिकाओं के जन्म पर 1.50 लाख रुपये का बचत बॉन्ड	महिला अधिकारिता विभाग
5.	**प्रधानमंत्री सिंचाई योजना कृषि**	सिंचाई प्रणाली हेतु विभिन्न घटकों जैसे तारबंदी, डिग्गी, फार्मपौण्ड, जलहोज निर्माण, ग्रीन हाउस, पॉली हाउस, शेड नेट, प्लास्टिक मल्चिंग, लो-टनल एवं ड्रिप / स्प्रिंकलर की स्थापना में किसानो को अनुदान तथा भूमिहीन कृषि श्रमिकों को 5 हजार रुपये लागत तक के कृषि यंत्र एवं उपकरण।	कृषि एवं उद्योग वानिकी विभाग
6.	**प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन**	स्वास्थ्य सुविधाओं में विस्तार एवं सुधार	चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग
7.	**कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान**	जल पुनर्भरण संरचनाओं का निर्माण	भूजल विभाग
8.	**स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)**	गांवों को खुले में शौच मुक्त स्थिति को बनाये रखना	पंचायती राज विभाग
9.	**स्वामित्व योजना**	सर्वे कर परिवारों को पट्टे वितरित करना	पंचायती राज विभाग
10.	**मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान 2.0**	4 हजार 700 से अधिक गांवों में Water Harvesting Structures के एक लाख 10 हजार कार्य करवाये जायेंगे।	पंचायती राज विभाग
11.	**अटल ज्ञान केन्द्र**	3 हजार से अधिक आबादी वाली पंचायत मुख्यालयों में प्रेरकों द्वारा युवाओं को रोजगारपरक प्रशिक्षण एवं e-Library की व्यवस्था।	पंचायती राज विभाग
12.	**मुख्यमंत्री शिक्षित राजस्थान अभियान**	नवीन शिक्षा नीति के क्रियान्वयन को गति देने तथा विद्यालयों में बेहतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु विभिन्न गतिविधियों का क्रियान्वयन।	स्कूल शिक्षा
13.	**प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना**	सामान्य क्षेत्रों में 500 (जनगणना 2001) व जनजातीय और रेगिस्तानी क्षेत्रों में 250 तक की आबादी की बसावटों को हर मौसम में पहुंच हेतु सड़क पुल निर्माण	सार्वजनिक निर्माण विभाग
14.	**अटल प्रगति पथ**	5,000 से अधिक आबादी वाले ग्रामीण कस्बों में सीमेंट कंकीट सड़क निर्माण।	सार्वजनिक निर्माण विभाग
15.	**प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी**	आर्थिक दृष्टि से कमजोर आय वर्ग व अल्प आय वर्ग के परिवारों को रियायती आवास	स्वायत्त शासन विभाग
16.	**स्वच्छ भारत मिशन (शहरी)**	शहरी क्षेत्रों में कचरा एवं सीवेज प्रबंधन	स्वायत्त शासन विभाग

17.	**मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना**	शहरी क्षेत्रों एवं कस्बों में Street Vendors के साथ ही अन्य जरूरतमंद एवं असहाय परिवारों के उत्थान के लिए	स्वायत्त शासन विभाग
18.	**पीएम विश्वकर्मा योजना**	18 ट्रेड के चयनित दस्तकारों को सर्टिफिकेट एवं आई कार्ड तथा 15 हजार रूपये की टूलकिट सहायता, 2 लाख रूपये तक का ऋण 30 माह के लिए, 8 प्रतिशत ब्याज अनुदान	उद्योग विभाग
19.	**मिशन हरियालो राजस्थान**	एक पेड़ माँ के नाम अभियान, पांच वर्षों में 50 करोड़ पौधे	वन विभाग
20.	**जल जीवन मिशन**	ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल कनेक्शन / खोदी गयी सड़कों की मरम्मत	जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग
21.	**अमृत योजना**	शहरी पेयजल आपूर्ति	जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग
22.	**पंचगौरव योजना**	पांचो घटकों में किये जाने वाले कार्यों का क्रियान्वयन	आयोजना विभाग
23.	**प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण**	बेघर परिवारों तथा कच्चे एवं टूटे-फूटे मकानों में रहने वाले परिवारों को पक्का मकान उपलब्ध कराने हेतु आर्थिक सहायता	ग्रामीण विकास विभाग
24.	**पण्डित दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्त गांव योजना**	चिन्हित गांवों के सभी बीपीएल परिवारों को गरीबी रेखा से ऊपर लाए जाने हेतु विभिन्न कार्यों /गतिविधियों का क्रियान्वयन।	ग्रामीण विकास विभाग
25.	**नमो ड्रोन दीदी, सोलर दीदी, लखपति दीदी, बैंक सखी, कृषि सखी एवं पशु सखी**	इन महिलाओं की संख्या बढ़ाने तथा इन्हें सहयोग हेतु विभिन्न गतिविधियों का क्रियान्वयन	ग्रामीण विकास विभाग

ऊर्जा विभाग की योजनाएं

1. प्रधानमंत्री कुसुम योजना

- नवीन एंव नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा मार्च 2019 में इस योजना को प्रारम्भ किया गया।
- सौर पंपों और ग्रिड से जुड़े सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाअभियान **"कुसुम"** योजना प्रारम्भ की गई है।

क्र.सं.	घटक	विवरण
1	घटक A	2 मेगावाट क्षमता तक के सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना।
2	घटक B	7.5 एचपी क्षमता तक के स्वतंत्र 20 लाख सौर ऊर्जा चालित कृषि पंपो की स्थापना।
3.	घटक C	ग्रिड से जुडे 7.5 एचपी क्षमता तक के 15 लाख सौर ऊर्जा चालित कृषि पंपो का सौरीकरण

(i) कम्पोनेन्ट-ए

- **प्रथम चरण- संचालन-** राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड (RRECL)
- दिसम्बर, 2024 तक 602 मेगावॉट क्षमता के 489 सौर ऊर्जा संयंत्रों के विद्युत क्रय अनुबंध (पीपीए) किये जा चुके हैं।
- **द्वितीय चरण-** संचालन राजस्थान डिस्कॉम्स
- 23 जुलाई, 2024 को राजस्थान सरकार के ऊर्जा विभाग के निर्देशानुसार राजस्थान डिस्कॉम्स को हस्तांतरित कर दिया गया।
- इस चरण के तहत 1,000 मेगावाट का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिसमे से JVVNL को 335 मेगावाट AVVNL को 330 मेगावाट और JDVVNL को 335 मेगावाट आवंटित किया गया है।
- 28 अक्टूबर, 2024 को राजस्थान विद्युत नियामक आयोग (REIC) ने ₹3.04 प्रति यूनिट की पूर्व निर्धारित स्तरित टैरिफ को स्वीकृति प्रदान की

(ii) कम्पोनेन्ट-सी (फीडर लेवल सोलराईजेशन)

- एक या अधिक अलग-अलग कृषि फीडरों की बिजली की आवश्यकता को उस फीडर को बिजली की आपूर्ति करने के लिए कैपेक्स मोड या रेस्को मोड के माध्यम से स्थापित किया जा सकता है।
- MNRE द्वारा 4,00,000 पम्प सेटों को सौर ऊर्जाकरित करने का लक्ष्य स्वीकृत किया गया है।

पहचान की गई क्षमता इस प्रकार है:-

I. योजना के अन्तर्गत चयनित कुल सब-स्टेशन - **5,020**
II. सौर्यकरण हेतु लक्षित कृषि उपभोक्ता- **14.21 लाख**
III. सोलर पावर प्लांट की लक्षित क्षमता - **17,155 मेगावॉट**

- राजस्थान डिस्कॉम द्वारा 4444 मेगावाट एसपीवी संयंत्र क्षमता के 3.13 लाख कृषि पम्प को सौर ऊर्जाकरित करने हेतु लेटर ऑफ अवॉर्ड (एलओए) जारी किए जा चुके हैं, जिसमे से दिसम्बर, 2024 तक 93.41 मेगावाट क्षमता के 36 ऊर्जा संयंत्र चालू हो चुके हैं।

2. संशोधित वितरण क्षेत्र योजना

- भारत सरकार ने पूर्व-योग्यता मानदंडों को पूरा करने और बुनियादी न्यूनतम बेंचमार्क प्राप्त करने के आधार पर आपूर्ति के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए डिस्काम्स को परिणाम से जुड़ी वित्तीय सहायता प्रदान करके डिस्काम्स को उनकी परिचालन क्षमता और वित्तीय स्थिरता में सुधार करने में मदद करने के लिए संशोधित वितरण क्षेत्र योजना (आरडीएसएस) को मंजूरी दी है।

शैक्षिक परिदृश्य, नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम

शैक्षिक नवाचार

- राजस्थान सरकार विद्यार्थियों के हितार्थ उन्हें शैक्षिक लाभ पहुंचाने हेतु प्रयासरत है।
- राजस्थान राज्य में विद्यार्थियों का शैक्षिक विकास निर्बाध रूप से हो इस हेतु शिक्षा विभाग द्वारा विभिन्न संसाधनों का उपयोग करते हुए शैक्षिक नवाचार किए गए। शैक्षिक नवाचारों का वर्णन निम्न प्रकार है-

स्माइल कार्यक्रम

- (SMILE: Social Media Interface for Learning Engagement)
- SMILE स्कूल शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार की एक नवीन शैक्षणिक पहल है।
- कोविड-19 के दौरान लॉकडाउन के समय घर पर सुरक्षित बैठे विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक स्तर तथा पाठ्यक्रम के अनुसार -कंटेंट या शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवाना इस कार्यक्रम का तात्कालीन उद्देश्य था।

स्माइल 1.0

- इस कार्यक्रम को 13 अप्रैल, 2020 को प्रारंभ किया गया।
- इस कार्यक्रम के तहत विद्यालय के अभिभावकों एवं अध्यापकों के दो व्हाट्सएप ग्रुप बनाए गए जिस पर प्रतिदिन सुबह 9:00 बजे E-content शैक्षिक सामग्री 13 अप्रैल 2020 में प्रेषित की गई।
- SMILE का शाब्दिक अर्थ सोशल मीडिया के संयोजन से विद्यार्थियों में अधिगम सक्रियता बनाये रखना हैं।
- इससे बच्चों को घर बैठे ऑनलाइन शिक्षण सामग्री प्राप्त हुई। एकि
- स्माइल के माध्यम से कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों को घर बैठे ई-कन्टेन्ट एवं शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवाई गई।
- स्माइल के लिए ई-कन्टेन्ट आरएससीईआरटी उदयपुर द्वारा तैयार किया गया।
- कक्षा-1 से 12 के विद्यार्थियों को प्रतिदिन 30-40 मिनट के विडियो के लिंक प्रतिदिन सुबह 9:00 बजे संदेश 'रोज सवेरे 9:00 बजे, हर घर स्कूल घंटी बजे' के साथ भेजे जाते थे।

e कंटेट भेजे जाने की प्रक्रिया :-

- राज्य स्तर पर RSCERT द्वारा विद्यार्थियों हेतु उपयोगी शिक्षण सामग्री का चयन किया जाता है। उसके बाद उसे सभांग - जिला- ब्लॉक स्तर के माध्यम से पंचायत स्तर पर PEEO को सम्प्रेषित किया जाता है।
- PEEO द्वारा शिक्षकों के ग्रुप में तथा शिक्षकों द्वारा अभिभावकों के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाई जाती है।

स्माइल 2.0

- प्रारम्भ 2 नवम्बर 2020 को 'आओ घर में सीखें' कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रारम्भ किया गया।
- उद्देश्य - SMILE कार्यक्रम के तहत् भेजे गए ई-कंटेट के साथ विद्यार्थी का जुड़ाव हो, इसके लिए उन्हें निरंतर गृहकार्य प्रदान करना व उसका मूल्यांकन करना।
- राजस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा इस्माइल कार्यक्रम के अगले कदम के रूप में स्माइल 2.0 कार्यक्रम 2 नवंबर 2020 को प्रारंभ किया गया। इस कार्यक्रम को.' आओ घर में सीखें' नाम दिया गया है। इस हेतु विद्यालय में निम्नलिखित क्रियाएं की जा रही हैं
- शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को कॉल करना प्रतिदिन 5 विद्यार्थियों को कॉल करना (प्रति शिक्षक)
- **क्रियान्वयन** - प्रत्येक कक्षा का अलग व्हाट्सअप ग्रुप बनाकर उसके माध्यम से गृहकार्य भेजा जाता था।
- विद्यार्थी उक्त कार्य को अपने नोटबुक में करके उसकी फोटो ग्रुप पर अपलोड करते थे जिसका प्रिंट निकालकर कक्षाध्यापक उसे विद्यार्थीवार पोर्टफोलियों में संधारित करता था। उक्त पोर्टफोलियो में संधारित गृहकार्य को उस सत्र के मूल्यांकन का भाग बनाया गया।
- जो विद्यार्थी व्हाट्सअप ग्रुप पर नहीं जुड़े थे, अध्यापक उनके घर जाकर गृहकार्य देते थे तथा गृहकार्य शीट प्राप्त करके पोर्टफोलियो में संलग्न करते थे।

गृहकार्य

- कक्षा 1 से 5 (प्रत्येक सोमवार)
- कक्षा 6 से 8 (प्रत्येक सोमवार एवं बुधवार)
- इस कार्यक्रम के तहत शिक्षकों के द्वारा घर-घर जाकर विद्यार्थियों को गृह कार्य दिया गया तथा जो विद्यार्थी ऑनलाइन पढ़ सकते थे उन्हें ऑनलाइन गृहकार्य भेजा गया।
- गृहकार्य की प्रति को फाइल में सुरक्षित कर प्रत्येक विद्यार्थी (कक्षा से 1 से 8 तक) का पोर्टफोलियो तैयार किया गया।

स्माइल 3.0

- SMILE-3.0 का प्रारम्भ शिक्षा विभाग द्वारा 21 जून 2021 से किया गया है।
- **उद्देश्य-** कोविड-19 की वजह से उपजी परिस्थितियों में विद्यार्थियों को हुए लर्निंग लॉस को न्यूनतम करने के लिए विद्यार्थियों को निरंतर कंटेट उपलब्ध करवाना, गृहकार्य के द्वारा निरंतर मूल्यांकन करना तथा व्हाट्सअप आधारित क्विज द्वारा सतत् मूल्यांकन करना।
- शिक्षा विभाग के इस नवाचारी कार्यक्रम में आओ घर से सीखें 2.0, स्माइल - 3.0, शिक्षावाणी, शिक्षादर्शन, व्हाट्सएप क्विज एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समर्थ अभियान शामिल हैं।
- SMILE-3.0 नवाचारी शैक्षिक कार्यक्रम के तहत किए जा रहे कार्य स्माइल 3.0 में गत सत्र 2020-21 के समान ही विद्यालयों द्वारा दैनिक रूप से प्राप्त होने वाली शैक्षणिक सामग्री के लिंक को विद्यार्थियों तक कक्षावार बनाए गए।
- कार्यक्रम में गत वर्ष की भाँति कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए दक्षता आधारित कंटेंट एवं गृहकार्य के लिए वर्कशीट्स को प्रतिदिन व्हाट्सएप समूह के माध्यम से प्रातः 8.00 बजे साझा किया जाता है।

- क्रियान्वयन SMILE 3.0 के तहत् ई-कंटेट सुबह 8.00 बजे पेरेंट्स व्हाट्सअप ग्रुप पर अपलोड किया जाता है। बाद में गृहकार्य का मूल्यांकन तथा साप्ताहिक क्विज का आयोजन किया आता है जिसमें निम्न प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं :-

स्माइल 3.0 के तहत निम्नलिखित कार्य किए गए

- वाट्सएप ग्रुप का निर्माण।
- व्हाट्सऐप ग्रुप्स में डिजिटल अध्ययन सामगी भेजना
- गृहकार्य वर्कशीट भेजना।
- विद्यार्थी पोर्टफोलियो तैयार करना।
- व्हाट्सएप आधारित क्विज, प्रश्नोत्तरी
- फोन कॉल के माध्यम से विद्यार्थियों से जुड़ना।

स्माइल कार्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित है-

- कोरोना काल में शिक्षा की निरंतरता सुनिश्चित करना।
- ऑनलाइन पाठ्यसामग्री विद्यार्थियों को उपलब्ध कराना।
- सोशल मीडिया (व्हाट्सएप) के माध्यम से शिक्षण सामग्री की पहुँच विद्यार्थियों तक सुनिश्चित करना।
- विद्यार्थियों को कक्षावार व समूहवार शिक्षण सुनिश्चित करते हुए गृहकार्य प्रदान करना एवं फिडबैक लेना।

शिक्षा दर्शन

- शिक्षा दर्शन की शुरूआत 1 जून, 2020 को हुई।
- राजस्थान सरकार के तत्कालीन शिक्षा मंत्री गोविन्द सिंह डोटासरा के प्रयासों से कोविड-19 के दौरान घर बैठे विद्यार्थियों को दूरदर्शन के माध्यम से ई-लर्निंग करवाने के उद्देश्य से शिक्षा दर्शन कार्यक्रम की शुरूआत की गई।

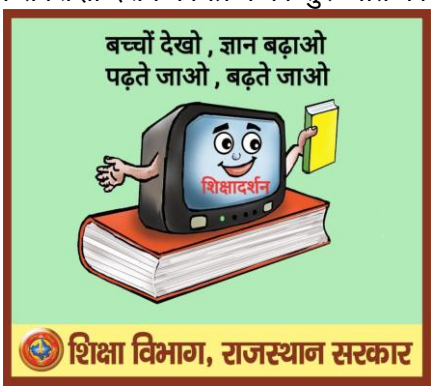

- **वाक्य-** 'बच्चों देखों ज्ञान बढ़ाओं, पढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ'
- सूचना और प्रसारण मंत्रालय के सहयोग से राजस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा कक्षा एक से बारहवीं तक के छात्रों के लिए शिक्षा दर्शन का कार्यक्रम प्रारंभ किया। कार्यक्रम का प्रसारण 1 जून 2020 से डी.डी. राजस्थान चैनल पर तीन भागों में हुआ है।
- ये तीन भाग (3.15 घंटे) के निम्न समय एवं कक्षा हेतु प्रसारित किए जाते हैं। शिक्षा दर्शन के कार्यक्रम प्रतिदिन 195 मिनिट प्रसारित हुए।
- यह डीडी राजस्थान पर प्रसारित किया जाने वाला एक शैक्षिक कार्यक्रम है। इसके अंतर्गत प्रतिदिन सवा तीन घंटे कक्षा 1 से 12 तक के लिए पाठ्यसमग्री का प्रसारित किया जाता है।
- शनिवार को 'नो बैग डे' पर कैरियर, कला, क्राफ्ट, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं जीवन उपयोगी एपिसोड्स को प्रसारित किया जाता है।

प्रसारण समय सारणी

12:30 से 01:30 बजे तक- कक्षा 9 से 10
01:30 से 02:30 बजे तक - कक्षा 11 से 12
03:00 से 03:30 बजे तक - कक्षा 1 से 5
03:30 से 04:15 बजे तक - कक्षा 6 से 8

- प्रत्येक शनिवार की सामग्री शिल्प, कला आदि पर आधारित होगी।
- शिक्षा दर्शन कार्यक्रम की पाठ्यसामग्री राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर द्वारा तैयार की गई।

नोट-

1. यह कार्यक्रम RSCERT (राजस्थान शिक्षा विभाग) द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से संचालित किया जा रहा है।
2. RSCERT के साथ सामग्री निर्माण व डिजिटल सहयोग में एकोवेशन (Eckovation), टिक टैक लर्न तथा सेन्ट्रल स्कायर फाउण्डेशन की भूमिका रही है।
3. कक्षा 5 तक काटूर्न के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा रही है।st
4. यह कार्यक्रम गर्मियों की छुट्टियों में भी संचालित किया जा रहा है।
5. शनिवार के दिन जीवन कौशल, कला, काफ्ट, करियर तथा मनोरंजन संबंधी कार्यक्रम का प्रसारण किया जा रहा है।

शिक्षा वाणी

- शिक्षा वाणी की शुरूआत 11 मई 2020 को हुई।
- कोविड-19 महामारी में विद्यार्थियों को घर बैठे शिक्षा प्रदान करने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार ने आकाशवाणी के माध्यम से शिक्षावाणी (Shiksha Vani) योजना की शुरुआत की गई ।

- **ध्यये वाक्य-**
  प्यारे बच्चों कान लगाओ,
  पढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ।
  कार्यक्रम की रूपरेखा-
  1. प्रसारण समय- प्रातः 11:00 बजे से 11:55 बजे तक (55 मिनट) सोमवार से शनिवार
  2. प्रसारण - आकाशवाणी के ऑल इण्डिया रेड़ियो पर राजस्थान के 25 रेडियो स्टेशन पर निःशुल्क प्रसारण।
  3. कंटेंट - कक्षा 1-2 के लिए 'मीना की कहानी' व कक्षा 3-12 के लिए पाठ्यक्रम आधारित कंटेंट (प्रत्येक शनिवार को हवामहल कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है।)

दैनिक सामग्री के प्रसारण की समय सारणी

समय	–	कक्षा
पहले 15 मिनट	–	कक्षा 1 और 2
16 मिनट से 35 मिनट	–	कक्षा 3 से 8
36 मिनट से 55 मिनट	–	कक्षा 9 से 12

हवामहल (प्रत्येक शनिवार)

शिक्षण-सामग्री निर्माण –

- शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षण सामग्री का निर्माण RSCERT उदयपुर के नेतृत्व में डाइट तथा MoU के तहत विभिन्न संस्थाओं व उच्च प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा किया जा रहा है।

नोट–

1. शिक्षावाणी का प्रसारण बीच में रोक दिया गया था जिसे 'आओ घर से सीखें 2.0' कार्यक्रम के साथ 21 जून, 2021 से पुनः प्रारम्भ किय गया।
2. शिक्षावाणी की CBSE द्वारा संचालित पॉडकास्ट आधारित एप्लीकेशन भी है जिसका उद्देश्य उचित समय पर बच्चों तथा अभिभावकों को सूचनाएं सम्प्रेषित करना है।
3. रेडियो के माध्यम से इस शैक्षिक कार्यक्रम का प्रसारण प्रतिदिन 55 मिनिट किया जाता है।
4. दूरदराज के क्षेत्रों में इंटरनेट की सीमित उपलब्धता के कारण शिक्षा विभाग रेडियो के माध्यम से 55 मिनट का शैक्षणिक कार्य प्रसारण 11 मई 2020 से प्रतिदिन प्रातः 11:00 से 11:55 तक कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम आधारित श्रव्य पाठों का प्रसारण शिक्षा वाणी के माध्यम से किया जा रहा है।
5. इसका साप्ताहिक प्रसारण कार्यक्रम विभिन्न विभागीय व्हाट्सएप ग्रुप व अन्य माध्यमों से सभी को उपलब्ध करवाया जाता है। ताकि विद्यार्थियों तक निर्बाध रूप से शैक्षणिक सामग्री पहुंच सके।

शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा वाणी के उद्देश्य निम्नलिखित है-

- कोरोना काल में शिक्षा की निरंतरता सुनिश्चित करना।
- रेडियो व टी.वी. के माध्यम से शिक्षण सामग्री का प्रसारण करना।
- दृश्य-श्रृव्य संसाधनों के माध्यम से शैक्षिक सामग्री को रोचक तरीके से विद्यार्थियों तक प्रसारित करना।

दीक्षा एवं दीक्षा राइज

- **DIKSHA - Digital Infrastructure for Knowledge Sharing**
- दीक्षा (DIKSHA) दीक्षा स्कूल शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय मंच है जो NCERT की एक पहल है।
- केन्द्रीय मानव संसाधन और विकास मंत्रालय (शिक्षा मंत्रालय) ने 5 सितंबर 2017 को (उपराष्ट्रपति बैंकया नायडू द्वारा) शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय डिजिटल माध्यम दीक्षा पोर्टल (diksha.gov.in) को शुरुआत की।
- दीक्षा-पोर्टल का विकास "One Nation, One Platform" के आधार पर NCERT द्वारा किया गया है।
- इस पोर्टल के माध्यम से शिक्षक गुणवत्ता वाली सामग्री ले सकते हैं और सामग्री को कई लोगों में बांटा जा सकता है और बुनियादी ढांचा मल्टी चैनल है, जिसका मतलब है कि यह पोसी, मोबाइल फोन, टैबलेट आदि जैसे विभिन्न प्रारूपों पर पहुंचा जा सकता है।

दीक्षा एप्लीकेशन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है-

- दीक्षा एप्लीकेशन के माध्यम से शिक्षक व शिक्षार्थियों तक विषय सामग्री की पहुँच 36 भाषाओं में सुनिश्चित कराई जाती है।
- इसमें शिक्षक, अधिगमकर्ता तथा प्रशासक के लिए अपनी पसंद के आधार पर Sign in के विकल्प है।
- इसमें CBSE, CISCE, IGOT-Health, NIOS, NCERT तथा विभिन्न SCERT के ई-कंटेट उपलब्ध है।
- दीक्षा को MIT लाइसेंस आधारित ओपन सॉर्स तकनीक, सनबर्ड द्वारा बनाया गया है।
- NCERT द्वारा ई-विद्या टीवी चैनल पर 24×7 प्रसारित किये जाने वाले कक्षा 1 से 12 के ई-कंटेंट को दीक्षा के साथ लिंक किया गया।
- दीक्षा-पोर्टल ओपन सोर्स तकनीकी पर आधारित है जो Made in india and Made for India की अवधारणा पर विकसित है।
- दीक्षा-पोर्टल का उपयोग भारतीय शिक्षा के सभी इकोसिस्टम द्वारा किया जाता है। जैसे-
  1. शिक्षाविद्
  2. विषय विशेषज्ञ
  3. सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएँ
  4. निजी संस्थाएँ
  5. स्वायतशासी संस्थाएँ
- वर्तमान राजस्थान राज्य में DIKSHA Portal का राजस्थान संस्करण DIKSHA RISE Portal (https://diksha.gov.in/ 7) है।
- DIKSHA पोर्टल पर शिक्षकों व विद्यार्थियों के लिए विषय वस्तु से संबंधित ऑनलाइन Teaching and Learning Contents (TLC) उपलब्ध है तथा विषय वस्तु संबंधित पाठ्य सामग्री के निर्माण की सुविधा भी उपलब्ध हैं।
- शिक्षा में तकनीकी के प्रयोग द्वारा पाठ्य सामग्री के निर्माण में रुचि रखने वाले सृजनात्मक अभिवृत्ति वाले शिक्षक DIKSHA पोर्टल से जुड़ कर Teaching and learning contents (TLC) का निर्माण कर सकतें हैं। इसके अतिरिक्त इस पोर्टल पर संस्थाप्रधानों तथा शिक्षकों के लिए विभिन्न व्यावसायिक उन्नयन पाठ्यक्रम (Pro- fessional development courses) भी उपलब्ध है। DIKSHA RISE Portal पर उपलब्ध TLC को मोबाइल पर DIKSHA APP के माध्यम से भी उपयोग किया जा सकता है।

दीक्षा राइज पोर्टल विशेषताएँ निम्नलिखित है -

- अपनी निजी जानकारी का पृष्ट बनाएँ।
- व्यक्तित्व प्रधान पाठ्यक्रम को चुनें
- अपनी स्वयं की विषयवस्तु सृजित करें।
- राज्य के आस-पास के शिक्षकों से जुड़े।
- कक्षा-कक्ष संसाधनों का उपयोग करें (विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध)।
- अपनी प्रगति का मूल्यांकन करें।

दीक्षा-पोर्टल का उपयोग-

- शिक्षक प्रशिक्षण व नेतृत्व क्षमता का प्रशिक्षण प्रदान करना।
- पाठ योजना तैयार करना व शिक्षण उपकरण के रूप में उपयोग।
- व्याख्या सामग्री उपलब्ध कराना।
- अभ्यास व गृहकार्य प्रदान करना।
- प्रश्न बैंक व परीक्षा तैयारी।
- आकलन (Assessment)
- क्विज प्रतियोगीता।
- इसमें संस्था प्रधानों/शिक्षकों के लिए कठिन topics हेतु ऑनलाइन Teaching and Learning Contents (TLC) निर्माण सुविधा व विभिन्न Professional Development Courses उपलब्ध है।
- राजस्थान में कक्षा 1 से 12 के सभी विषयों के लिये कंटेंट निर्माण का कार्य शिक्षकों के द्वारा किया गया है जो कि DIKSHA पोर्टल व DIKSHA APP पर सभी के लिए उपलब्ध है।
- कक्षा 1 से 12 के सभी विषयों हेतु Hard Spots का चयन कर कंटेंट निर्माण कार्य राज्य की DIET's तथा CTE's के माध्यम से किया जा रहा है जो QR Codes के माध्यम से पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध करवाया गया है।

DIKSHA - Digital Infrastructure for Knowledge Sharing

RISE- Rajasthan Interface for School Educators

दीक्षा-राईज

- राजस्थान राज्य के शिक्षकों का ऑनलाइन प्लेटफार्म है।
- शिक्षा विभाग व NCTE (National Council for Teacher Education) द्वारा तैयार किया गया।
- **आदर्श वाक्य- हमारे शिक्षक, हमारे नायक।**
- दीक्षा-राइज का राज्य में विकास RSCERT उदयपुर के प्रभाग (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी प्रभाग, अजमेर) द्वारा किया जा रहा है।

दीक्षा-राईज के उद्देश्य निम्नलिखित है-

- शिक्षकों को गुणवत्तायुक्त मंच प्रदान करना।
- शिक्षकों का व्यक्तिगत व व्यावसायिक विकास करना
- शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों में सीखने की क्षमता विकसित करना।
- शिक्षा के सभी इकोसिस्टम को लाभान्वित करना।
- ई-कन्टेंट व ई-बुक उपलब्ध करवाना।शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों व संस्थाप्रधानों को कंटेंट उपलब्ध करवाना व लाभान्वित करना।
- राज्य की पाठ्यसामग्री व पाठ्यचर्या से अवगत करना।
- ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करना।
- समावेशी शिक्षा की पुस्तकों को ऑडियो फार्मेट में तैयार करना।
- उपचारात्मक शिक्षण की सामग्री उपलब्ध कराना।
- कक्षा 1 से 12 की पाठ्यपुस्तकों पर क्यू आर कोड उपलब्ध कराना व कठिन बिन्दु चिह्नित करना।
- विद्यार्थियों के लिए वर्कबुक उपलब्ध कराना।
- छोटे बच्चों के लिए (कक्षा 1 व 2) कॉमिक बुक उपलब्ध कराना।
- शिक्षा दर्शन व शिक्षावाणी का कंटेंट दीक्षा पोर्टल पर अपलोड करना।
- शिक्षा से संबंधित एनिमेटेड विडियो उपलब्ध कराना।

दीक्षा राईज के लाभ निम्नलिखित है-

- डिजिटल शिक्षा की अवधारणानुसार ई-कंटेंट उपलब्ध करवाना।
- एक राष्ट्र/एक राज्य एक प्लेटफार्म।
- शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं संस्थाप्रधानों/अधिकारियों को सहायता।
- उच्चगुणवत्तापूर्ण शिक्षा का मंच।
- स्व मूल्यांकन आधारित मंच।
- अभिभावक विद्यालय समय के बाद शिक्षकों से संवाद कर सकते हैं।
- शिक्षा से जुड़े सभी हितधारकों के लिए मंच।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा से कक्षा 12 के लिए उपयोगी।
- विभिन्न प्रकार के शिक्षक प्रशिक्षण ऑनलाइन व ऑफलाइन उपलब्ध करवाना। जैसे निष्ठा।

निष्ठा -

- स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र प्रगति के लिए राष्ट्रीय पहल है।
- एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम से स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रारंभिक स्तर पर सभी शिक्षकों और स्कूल प्राधानाचार्य की क्षमता का निर्माण करना है।
- पदाधिकारियों (राज्य, जिला, ब्लॉक, क्लस्टर स्तर पर) को सीखने के प्रतिफलों, स्कूल आधारित मूल्यांकन, शिक्षार्थी - केंद्रित शिक्षाशास्त्र, शिक्षा में नई पहल, बहुल शिक्षाशास्त्रों आदि के माध्यम से बच्चों की विविध आवश्यकताओं को संबोधित करने पर एकीकृत तरीके से प्रशिक्षित किया जा रहा है। यह राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर राष्ट्रीय संसाधन समूह और राज्य संसाधन समूहों (एसआरजी) का गठन करके आयोजित किया जाएगा। इस क्षमता निर्माण की पहल के साथ एक कड़ी निगरानी और सहायक तंत्र का भी उपयोग किया जाएगा।

NISHTHA : National Initiative for School Heads' and Teachers' Holistic Advancement

- NISHTHA 1.0 : Elementary level (Classes I-VIII)
- NISHTHA 2.0 : Secondary level (Classes IX-XII)
- NISHTHA 3.0 : Foundational Literacy & Numeracy
- NISHTHA 4.0 : Early Childhool Care & Education

विगत वर्ष के प्रश्न

Reet Mains L-1 (I[st] Shift)
25.02.2023

1. निम्नलिखित में से कौन-सी राजस्थान में वनों के प्रशासनिक वर्गीकरण की श्रेणी नहीं है?
(A) आरक्षित वन (B) अनारक्षित वन
(C) सुरक्षित वन (D) अवर्गीकृत वन **[B]**

2. चित्तौड़गढ़ के किले में त्रिभुवन नारायण मन्दिर का निर्माता कौन थे?
(A) महाराणा मोकल (B) भोज परमार
(C) महाराणा अरिसिंह (D) नागभट्ट प्रथम **[B]**

3. राजस्थानी लोक साहित्य री दीठ सूं 'हरजस' काई है?
(A) लोकगाथा (B) ख्याल
(C) पवाड़ा (D) लोकगीत **[D]**

4. चम्बल बेसिन की खण्ड भूमि को कहा जाता है-
(A) अवनलिकायें (B) सेम
(C) चादर धुलन (D) भूमिसर्पण **[A]**

5. राजस्थानी में रामकथा 'रै आधार पर 'रामायण' सिरैनांव सू आख्यान काव्य कुण लिख्यौ?
(A) पदम भगत (B) मुंढता रुघनाथ
(C) मेहोजी गोदारा (D) सरवण भूकर **[C]**

6. राजस्थान में 'वालर' कृषि का प्रकार है-
(A) स्थानान्तरित कृषि (B) अंतः कृषि
(C) व्यापारिक कृषि (D) बाग़ानी कृषि **[A]**

7. भारतीय वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम लागू हुआ-
(A) 1992 (B) 1982
(C) 1972 (D) 1962 **[C]**

8. रामस्वरूप किसान से कहाणी संग्रेनी है-
(A) तीखी धार (B) हाडाखोड़ी
(C) धान कथावां (D) बारीक बात **[C]**

9. निम्नलिखित में से कौन फड़ वाचन से सम्बंधित हैं?
(A) भोपे (B) कालबेलिया
(C) बनजारे (D) सरगडे **[A]**

10. निम्न में से कौन-सी राजस्थान की लोकनाट्य शैली नहीं है?
(A) स्वांग (B) रम्मत
(C) ढाढ़ी (D) ख्याल **[C]**

11. जनगणना 2011 के अनुसार, एक व्यक्ति जिसकी आयु 7 वर्ष या अधिक है तथा वह किसी भाषा के समझने के साथ पढ़ व लिख सकता है, वह कहलाता है-
(A) साक्षर (B) निरक्षर
(C) स्नातक (D) विज्ञ **[A]**

12. जसनाथी सम्प्रदाय री प्रधान पीठ कठीने है?
(A) पीपासर (B) कतरियासर
(C) मुकाम तालवा (D) सिंगरासर **[B]**

13. 1938 में करौली राज्य प्रजामण्डल की स्थापना किसने की?
(A) मदनसिंह (B) गोपालसिंह
(C) गोपीलाल यादव (D) त्रिलोक चन्द माथुर **[D]**

14. मुकुन्दरा की पहाड़ियाँ कौन से जिलों में विस्तृत है?
(A) जोधपुर, नागौर (B) पाली, सिरोही
(C) झालावाड़, कोटा (D) अजमेर, जयपुर **[C]**

15. ट्रेंच कमीशन किस आंदोलन से सम्बंधित है?
(A) अलवर किसान आंदोलन
(B) मेव किसान आंदोलन
(C) बेगूं किसान आंदोलन
(D) पारसोली किसान आंदोलन **[C]**

16. अरावली श्रृंखला का उच्चतम शिखर है-
(A) गुरुशिखर (B) सेर
(C) जरगा (D) तारागढ़ **[A]**

17. चन्द्रभागा पशु मेला कहाँ लगता है?
(A) राजसमंद (B) अजमेर
(C) झालरापाटन (D) नागौर **[C]**

18. 'बीसलदेव रासो' किण भांत रो काव्य है?
(A) वीर काव्य (B) प्रेम काव्य
(C) भक्ति काव्य (D) प्रकृति काव्य **[B]**

19. कजली तीज का त्योहार कहाँ मनाया जाता है?
(A) उदयपुर (B) बूंदी
(C) जयपुर (D) जोधपुर **[B]**

20. भारत गौरव रेल का मुख्य उद्देश्य है-
(A) घरेलू पर्यटन को प्रोत्साहन देना
(B) रेलयात्रा को प्रोत्साहन देना
(C) भारतीय रेलवे का विकास प्रदर्शित करना
(D) राजाओं और उनके शाही स्थानों के बीते हुए युग को पुनः दर्शाने हेतु **[A]**

21. मानहेरा टीब्बा ..... का प्रमुख खनन क्षेत्र है।
(A) प्राकृतिक गैस (B) पेट्रोलियम
(C) लिग्नाइट (D) चूना पत्थर **[A]**

22. महिला चित्रकारों कमला एवं इलायची के नाम किस चित्रकला शैली से सम्बंधित हैं?
(A) किशनगढ़ (B) नाथद्वारा
(C) अलवर (D) जोधपुर **[B]**

23. कृष्णा कुमारी किस राज्य की राजकुमारी थी जिसके विवाह के विवाद ने राजपूताना में राजनीतिक उथल-पुथल उत्पन्न कर दी?
(A) जयपुर (B) उदयपुर
(C) जोधपुर (D) बीकानेर **[B]**

24. कुम्भलगढ़ तथा गोगुन्दा के मध्य की उच्च भूमि कहलाती है-
(A) उमरमाल (B) भोराट
(C) गिर्वा (D) उरिया **[B]**

25. निम्नलिखित में से किस लोकदेवता को जाहिर पीर के रूप में भी पूजा जाता है?
(A) तेजाजी (B) रामदेवजी
(C) पाबूजी (D) गोगाजी **[D]**

26. कुम्भलगढ़ दुर्ग का प्रमुख शिल्पी कौन था?
(A) दीपा (B) लालचन्द
(C) मण्डन (D) चम्पालाल **[C]**

27. आदिकालीन धारण शैली रा रचनाकार नीं है-
(A) श्रीधर व्यास (B) बादर ढाढी
(C) गाडण सिवदास (D) वज्रसेन सूरि **[D]**

28. 'हाड़ौती' बोली मुख्य रूप सूं कठीनै बोली जाये?
(A) गंगानगर, हनुमानगढ़ (B) अजमेर, नागौर
(C) कोटा, बूंदी (D) उदयपुर, चित्तौड़गढ़ **[C]**

29. राजस्थान का तेरापंथी सम्प्रदाय निम्नलिखित में से किससे सम्बंधित है?
(A) वैष्णव धर्म (B) बौद्ध धर्म
(C) जैन धर्म (D) शैव पंथी **[C]**

30. निम्नलिखित में से कौन-सी पश्चिमी राजस्थान में पाई जाने वाली एक घास नहीं है?
(A) सेवण (B) धामण
(C) कराड़ (D) सालर **[D]**

31. निम्नलिखित में से कौन-सा सही नहीं है?
(A) सुंधा माता मंदिर रोप वे - जालौर
(B) मनसापूर्णा करणी माता मंदिर रोप वे - उदयपुर
(C) बालाजी रोप वे - सामोद (जयपुर)
(D) सावित्री माता मंदिर रोप वे – सिरोही **[D]**

32. कथेतर गद्य री पोथी 'ओळू री अखियातां' रा रचनाकार है-
(A) शिवराज छंगाणी (B) मुरलीधर व्यास
(C) नेमनारायण जोशी (D) ब्रजनारायण पुरोहित **[C]**

33. "मरु राष्ट्रीय उद्यान' किस खिले में अवस्थित है?
(A) जोधपुर (B) बीकानेर
(C) जैसलमेर (D) बाड़मेर **[C]**

34. वैलि क्रिसन रुकमणी री' रा रचनाकार है-
(A) बारहठ ईसरदास (B) ठाकुर रामसिंह
(C) पृथ्वीराज राठौड़ (D) संत विट्ठलदास **[C]**

35. आं में सूं कुणसी बोली राजस्थान में नीं बोलीजै?
(A) हाड़ोती (B) वागड़ी
(C) मेवाती (D) अवधी **[D]**

36. काली मृदा जानी जाती है-
(A) कांप मिट्टी से
(B) लैटराइट मिट्टी से
(C) रेगुर मिट्टी से
(D) बांगर एवम् खादर मिट्टी से **[C]**

37. राजस्थान के किस संभाग में सर्वाधिक मक्का उत्पादन होता है?
(A) कोटा (B) बीकानेर
(C) जोधपुर (D) उदयपुर **[D]**

38. कला प्रेमी सावंतसिंह किस प्रान्त के शासक थे?
(A) जोधपुर (B) किशनगढ़
(C) करोली (D) जयपुर **[B]**

39. राजस्थान राज्य वन नीति लागू की गई-
(A) 2008 (B) 2006
(C) 2010 (D) 1988 **[C]**

40. स्त्रियाँ बोरला आभूषण शरीर के किस भाग पर पहनती है-
(A) हाथ (B) गर्दन
(C) कान (D) सिर **[D]**

41. बनास नदी का उद्गम है-
(A) करौली पहाड़ियाँ (B) बैराठ पहाड़ियाँ
(C) नाग पहाड़ (D) खमनौर पहाड़ियाँ **[D]**

42. बरखान हैं-
(A) रेत के टीले (B) डेल्टा
(C) पहाड़ियाँ (D) झीलें **[A]**

43. रखड़ी और टोटी ..... है-
(A) महिलाओं के गहने (B) पुरुषों के वस्त्र
(C) स्वदेशी जूते (D) साफों के प्रकार **[A]**

44. निम्नलिखित में से किस सभ्यता को धूलकोट कहते हैं?
(A) बालायल (B) आहड़
(C) गिलूण्ड (D) कालीबंगा **[B]**

45. मेजा बांध बनाया गया है-
(A) मेज नदी पर (B) कोठारी नदी पर
(C) चम्बल नदी पर (D) बनास नदी पर **[B]**

46. कंवर सेन द्वारा राजस्थान नहर की शुरूआत की गई, वर्ष-
(A) 1958 (B) 1948
(C) 1938 (D) 1968 **[B]**

47. गणेश्वर ..... संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल है।
(A) ताम्रयुगीन (B) पुरापाषाण
(C) मध्यपाषाण (D) नवपाषाण **[A]**

48. बीकानेर के निकट सम्भरायल को किस लोकदेवता ने अपना कर्म-स्थल बनाया?
(A) गोगाजी (B) पाबूजी
(C) धन्नाणी (D) जाम्भोजी **[D]**

49. मारवाड़ की पन्ना धाय किसे कहा जाता है?
(A) गोरा धाय (B) बाला धाय
(C) बीजल धाय (D) लाछा धाय **[A]**

50. राजस्थान में पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग का गठन कब हुआ था?
(A) 1949 में (B) 1950 में
(C) 1952 में (D) 1953 में **[B]**

51. राजस्थान के कितने जिले सीमा क्षेत्र विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत आते हैं?
(A) चार (B) पाँच
(C) छ: (D) सात **[A]**

52. राजस्थान के खिलाड़ी, धनंजय दर्जी, जो हाल ही में खबरों में थे, किस खेल से सम्बन्धित हैं?
(A) क्रिकेट (B) हॉकी
(C) फुटबाल (D) बैडमिंटन **[C]**

53. सरसों अनुसंधान निदेशालय स्थित है-
(A) अजमेर में (B) जयपुर में
(C) अलवर में (D) भरतपुर में **[D]**

54. एशिया का सबसे बड़ा कृषि फार्म राजस्थान के निम्नलिखित में से किस स्थान पर स्थित है?
(A) तबीजी (अजमेर) (B) दुर्गापुरा (जयपुर)
(C) सूरतगढ़ (गंगानगर) (D) जैतसर (गंगानगर) **[C]**

विज्ञापन

मुश्किल परीक्षाऐं भी आसान लगेगी
जब तैयारी होगी लक्ष्य के साथ

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

तृतीय श्रेणी (3rd Grade)

अध्यापक भर्ती परीक्षा

LEVEL-I and LEVEL-II

(हिन्दी, ENGLISH, संस्कृत, सामाजिक अध्ययन, SCIENCE-MATH)

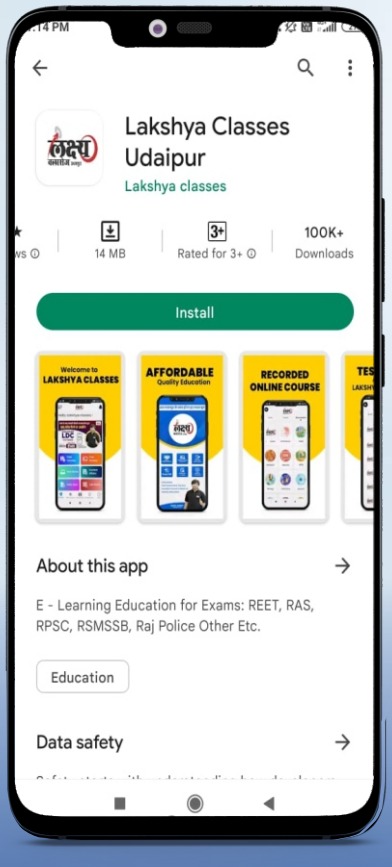

- COURSE OFFERED -

- NOTES WITH LIVE FROM CLASSROOM BATCH
- MCQ BASED BATCH
- TASK BASED TEST SERIES
- NOTES WITH RECORDED BATCH
- OFFLINE CLASSROOM BATCH

क्यों हैं लक्ष्य क्लासेज विशेष?

- व्यापक अध्ययन सामग्री
- MCQ की बुकलेट
- नियमित टेस्ट सीरीज
- पूर्णत: समर्पित यूट्यूब चैनल
- लाइब्रेरी सुविधा
- अनुभवी एवं योग्य फैकल्टी
- सुसज्जित स्मार्ट क्लासरूम
- ऑनलाइन एप्लीकेशन एक्सेस
- मासिक करंट अफेयर्स मैगज़ीन
- नियमित काउंसलिंग

MRP : ₹849

Scan to Download Lakshya App Now

Google play

INSTAGRAM | FACEBOOK | YOUTUBE | TELEGRAM

S.No.: AP0005

CODE : APGC

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज™

M. 9079798005, 6376491126

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur